जून 2003 Rs. 10/-

चन्दामामा

PARLE

नया
टेस्टी बार
चॉकलेटी मज़ा के साथ

PARLE
CHOX
TASTY CHOCOLATEY BAR

Visit: www.parleproducts.com
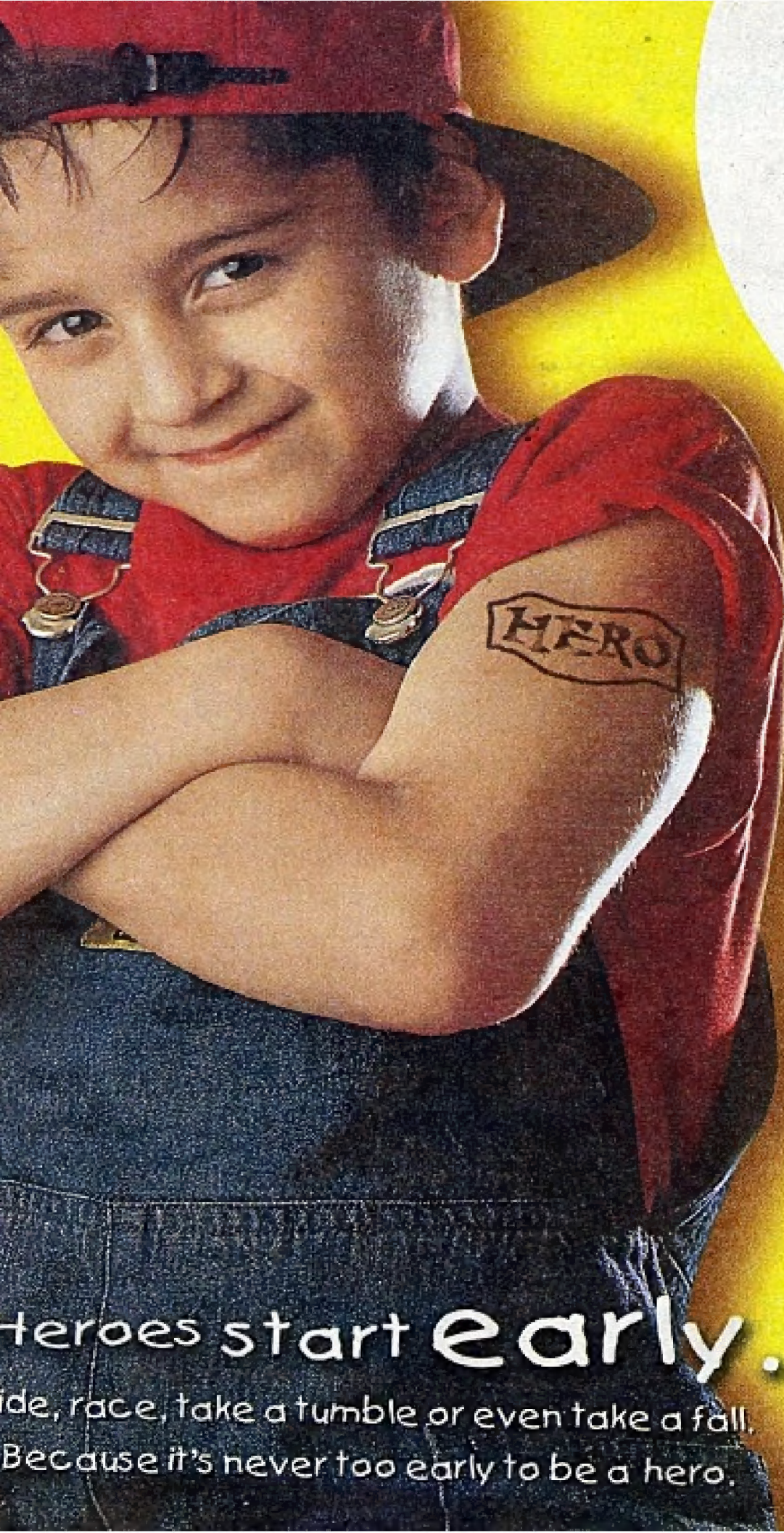
विशेष आकर्षण

संम्पुट - १०७ जून - २००३ सञ्चिका - ६

स्वास्थ्य रहस्य

१९

ग़लती का एहसास

५५

माया सरोवर

१३

राक्षसी का पालतू तोता

५१

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

सपना देखने का आमंत्रण

मुझे विश्वास है कि तुम्हें अपनी पत्रिका के नये साहसिक कार्य 'जूनियर चन्दामामा' के विषय में पहले से विदित होगा, जो तुम्हारे छोटे भाई-बहनों तथा उन्हीं के समान अन्य बच्चों को ध्यान में रखकर प्रकाशित की गई है। मैं इसे साहसिक कार्य कहता हूँ, पर सच तो यह है कि यह एक दुस्साहसपूर्ण यात्रा है - विचारों के जगत में। इस योजना की प्रेरणा छोटे बच्चों के सामने कुछ सचमुच सार्थक सामग्री प्रस्तुत करने की आवश्यकता से स्फुरित हुई - ऐसे लेख, चित्र जो उनका मनोरंजन करे, सोचने-विचारने की प्रेरणा दे और कहानियों व प्रश्नों के माध्यम से अपनी मातृभूमि की परम्परा के प्रति उन्हें सजग करे। इस आदर्श को आकार देने के कार्य में समर्पित मेधावियों का एक दल कार्यरत है।

इस दिशा में हमारी प्रेरणा को विगत १० अप्रैल को और भी अधिक महत्व मिला, जब भारत के राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने नये प्रकाशन की एक प्रति स्वीकार करने की कृपा की। नई पत्रिका को देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने कामना की कि इसे बच्चों के जीवन में यथोचित स्थान मिले। जो बात हमें गहराई तक छू गई वह यह थी कि उन्होंने स्वप्न देखने की आवश्यकता पर बहुत बल दिया। हम अपने बच्चों के लिए उपयुक्त भविष्य की आशा तभी कर सकते हैं जब बच्चे स्वप्न देखना, अभीप्सा करना जानें और जानें ऊँचे विचारों में उड़ान भरना, जानें अपने सपनों को साकार करने के लिए आवश्यक साहस और धैर्य जुटाना।

आयें, हम सब इस समर्थ और स्वस्थ सलाह को पूरी सत्यनिष्ठा के साथ कार्यान्वित करें। हम व्यक्तिगत रूप से तभी सुखी रह सकते हैं जब हम एक बेहतर और महानतर भविष्य के लिए सामूहिक रूप से एक साथ मिलकर सपना देख सकें।

सम्पादक : *विश्वम*

Visit us at : http://www.chandamama.org
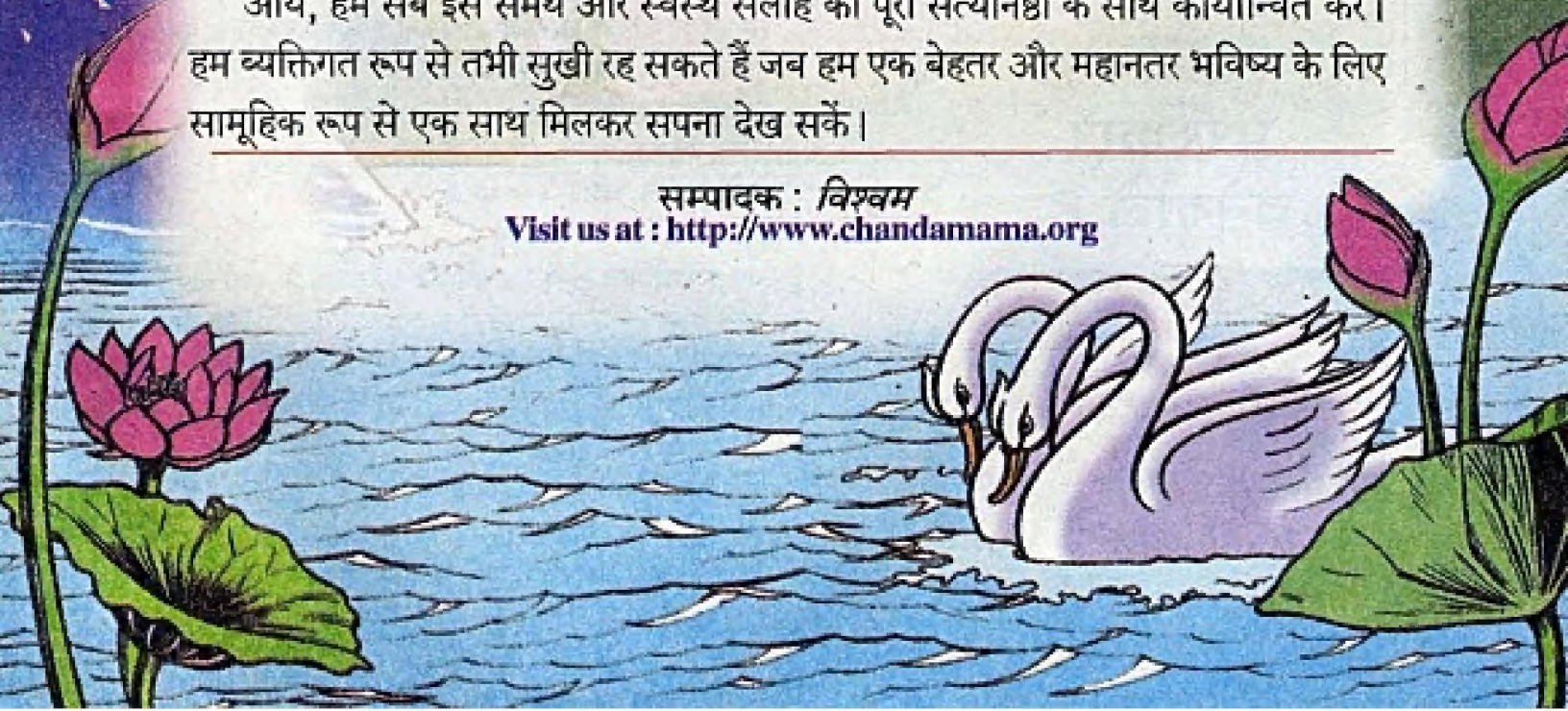
'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

भारत के नायक - २१

भारत में शास्त्रीय संगीत एक समृद्ध परम्परा है। यहाँ कुछेक संगीत नायकों का प्रसंग है। तुम कितनों को पहचान सकते हो?

तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।

1. कर्नाटक संगीतज्ञत्रय में सबसे कम आयु का मैं मुख्यतः वीणा वादक था। मैंने संस्कृत गीतों के लिए पाश्चात्य धुन का प्रयोग किया। मैं कौन हूँ?

----

2. मैंने कर्नाटक और हिन्दुस्तानी दोनों संगीतों में गीतों की रचना की। मैं ट्रावनकोर का महाराजा भी था। क्या मुझे जानते हो?

----

3. मैं एक विख्यात ध्रुपद गायक हूँ। मैं ग्वालियर के राजा मान सिंह तोमर के दरबार में शाही संगीत-रचनाकार था। क्या मेरा नाम बता सकते हो?

----

4. मैं १४८४ से १५६४ के काल में भक्ति-कवि था। मैंने ४ लाख ७५ हजार भक्ति गीतों की रचना की। मैं कौन हूँ?

----

5. मेरा जीवन-काल १४२४ से १५०३ तक था। मैंने तिरुपति के स्वामी वेंकटेश्वर की स्तुति में लगभग ३२ हजार गीतों की रचना की। मेरा नाम क्या है?

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श नायक कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें :

मेरा प्रिय संगीत नायक ....है, क्योंकि

....

प्रतियोगी का नाम: ....

उम्र: .... कक्षा: ....

पूरा पता: ....

....

पिन: .... फोन: ....

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ....

अभिभावक के हस्ताक्षर: ....

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर ५ जुलाई २००३ से पूर्व भेज दें।

हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-२१
चन्दामामा इन्डिया लि.
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी
ईक्काडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए है।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुईं तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

पुरस्कार देनेवाले हैं

FIRST COPY FOR THE FIRST CITIZEN

April 10, 2003, was a red-letter day for **Chandamama**, when the First copy of the first issue of ***Junior Chandamama*** was presented to His Excellency **Dr. A.P.J. Abdul Kalam**, President of India, who has endeared himself as a trusted friend of the children of India. He graciously accepted the magazine from the publishers who had called on him that evening. He was very appreciative of the publication and blessed the bold venture, launched after providing healthy reading for children for 56 years.

उतावला तैराक

कोदंड हेलापुरी का निवासी है। वह गजब का तैराक है। वह जल्दबाज़ है। कोई भी काम तुरन्त करने की उसकी मनोवृत्ति है।

कोदंड की बेटी की शादी हो चुकी और अब वह अपने पति के साथ सुगंधपुरी में रह रही है। कुछ चीज़ें ऐसी हैं, जो केवल हेलापुरी में ही उपलब्ध होती हैं। उसे ये चीज़ें अपनी बेटी को तुरंत सौंपनी है। उसने सब चीज़ों की एक गठरी बाँध ली और सुगंधपुरी जाने के लिए नदी किनारे पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि दो किलोमीटर की दूरी पर नाव है और लोगों से वह खचाखच भरी हुई है।

अगर वह यथाशीघ्र नाव में जा नहीं पायेगा तो हो सकता है, उसकी लायी चीज़ों में से कुछ चीज़ें ख़राब हो जाएँ। उसने ठान लिया कि जो भी हो, नाव के पास पहुँचना है और उसमें चढ़ना है। उसने अपनी धोती व कुरता उतार, पगड़ी को अपनी कमर में बाँध लिया, गठरी अपने सिर पर रख ली और नदी में उतरकर नाव की ओर त्वरित गति से बढ़ने लगा।

उसकी कोशिश सफल हुई। वह नाव में बैठ गया। उसके सामने बैठे शरत ने ताज्जुब होकर कहा, ''नाव तक आने का इतना उतावलापन क्यों? नाव तो नदी किनारे पहुँचने ही वाली है। किनारे पर मुसाफ़िरों की भीड़ भी नहीं है। सुगंधपुरी जाने के लिए तुम्हें ज़रूर जगह मिल जाती।''

तब जाकर कोदंड को मालूम हुआ कि जिस नाव में यात्रा करने के लिए उसने इतनी मेहनत की, वह नाव सुगंधिपुरी से हेलापुरी लौट रही है और यही नाव सुगंधिपुरी जायेगी।

- धनीराम

महादेव का आशीर्वाद

शिवपुर का ग्रामाधिकारी नागेश ग्रामीणों को बहुत सताता था। कुछ लोगों ने सोचा कि क्यों न हम नागेश के अत्याचारों के बारे में राजा को बतलायें। परंतु वह हर साल रानी को मूल्यवान भेंट दिया करता था। इस कारण ग्रामीणों को भय हुआ कि शायद राजा कोई कार्रवाई ही न करें और उल्टे उन्हें सज़ा दें।

तभी उस गाँव के एक किसान के घर भद्र नामक एक अतिथि आया। उसने गाँव की दुःस्थिति को देखते हुए लोगों को सलाह दी, "नगर में महादेव नामक एक ज्ञानी हैं। वे उत्तम और आदर्श व्यक्ति हैं। उनकी वाणी में असाधारण शक्ति है। उन्हें गाँव में आने का निमंत्रण दीजिए। आपका भला होगा।"

सब ग्रामीणों ने मिलकर चित्राक्ष नामक एक आदमी को महादेव के पास भेजा। उसने महादेव को ग्रामीणों के कष्टों का विवरण दिया और उन्हें समझाकर गाँव ले आया। महादेव, चित्राक्ष के घर में ही रहने लगे। महादेव शामके समय ग्रामीणों को पुराण पढ़कर सुनाते थे। हितबोध करते थे, नैतिक मूल्यों पर प्रकाश डालते थे। वे कहते थे, "समझ लीजिए, जिस फल को हमने पेड़ से तोड़ा, उसका एक भाग सड़ गया है। सड़े हुए भाग को खाने से हमारी तंदुरुस्ती बिगड़ जाती है। फल के अच्छे भाग को खाने से हमारी भूख मिटती है और हम तंदुरुस्त बने रहते हैं। दूसरे आदमी के बारे में भी इसी कोण से हमें देखना चाहिए। उसकी अच्छाई को हमें ग्रहण करना चाहिए और बुराई पर ध्यान देना नहीं चाहिए।"

इन नीति भरी बातों ने ग्रामीणों पर बहुत अच्छा प्रभाव डाला। वे एक-दूसरे की सहायता करने लगे, एक-दूसरे के साथ बड़े ही प्रेम से पेश आने लगे। अब वे नागेश के अत्याचारों पर टीका-टिप्पणी करने से भी दूर रहने लगे। यों महादेव का आगमन नागेश के लिए भी अच्छा ही साबित हुआ।

- भार्गव -

एक दिन, चित्राक्ष की गाय नागेश के खेत में चारा चरने लगी। नागेश के आदमियों ने उसे पकड़ लिया और गोशाला में बाँध दिया। नागेश ने चित्राक्ष को ख़बर भिजवायी कि इस अपराध के लिए वह सौ अशर्फ़ियाँ जुरमाने के रूप में भरे।

चित्राक्ष खुद ग्रामाधिकारी नागेश से मिला और विनती की, ''इतनी बड़ी रकम मैं कहाँ से लाऊँगा। गाय की क़ीमत भी इतनी नहीं होगी। चारे का मूल्य चुका दूँगा।'' पर नागेश ने उसकी एक भी बात नहीं मानी और कहा, ''दो दिनों के अंदर अगर तुमने यह जुरमाना नहीं भरा तो हर रोज़ तुम्हें दस कोड़े लगेंगे। तुम्हें यह स्वीकार न हो तो गाँव छोड़ दो।''

चित्राक्ष रोया-धोया, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। महादेव को जब यह बात मालूम हुई तो उन्होंने चित्राक्ष को समझाते हुए कहा, ''दुखी न होना। अगर न्याय तुम्हारे पक्ष में है तो भगवान धन देकर तुम्हारी मदद करेंगे।''

उस दिन शामको जब चित्राक्ष घर के पिछवाड़े में पौधों को रोपने के लिए ज़मीन खोद रहा था, तब खन-खन की आवाज़ आयी। उसने और खोदा तो वहाँ उसे तांबे का एक घड़ा दिखायी पड़ा। घड़े में सोने की अशर्फ़ियाँ थीं। उनमें से उसने सौ अशर्फ़ियाँ लीं और जुरमाना भर दिया और गाय को वह घर ले आया।

नागेश ने तहक़ीकात की कि चित्राक्ष को इतनी रक़म कहाँ से मिल गयी। जब उसे मालूम हो गया तो उसने चित्राक्ष को संदेश भिजवाया, ''जो धन-राशि मिली है, वह तुम्हारी नहीं, राजा की है। राजा के धन को उनके प्रतिनिधि ग्रामाधिकारी को सौंपना तुम्हारा फ़र्ज़ है। अगर इसमें से कुछ रक़म तुमने खर्च कर दी हो तो ब्याज सहित देना चाहिए।''

महादेव ने यह जानकर चित्राक्ष से कहा, ''घबराओ मत। ग्रामाधिकारी से बता दो कि तांबे के घड़े में तुम्हें अशर्फ़ियाँ नहीं, काले बिच्छू मिले हैं। भगवान की कृपा हो तो वह उसमें काले बिच्छू ही पायेगा।'' चित्राक्ष ने ऐसा ही किया, और हुआ भी महादेव के कहे मुताबिक ही।

एक बार चित्राक्ष का पड़ोसी रतन एक तक़लीफ़ में फँस गया। उसकी बहन बड़ी ही सुंदर थी। नागेश ने हठ किया कि उसकी शादी उसके बेटे से ही होनी चाहिए। नागेश का बेटा

कुरूप था और अपने पिता से भी अधिक दुष्ट और पापी था। रतन को कोई उपाय नहीं सूझा तो वह महादेव के पास आया। उन्होंने उससे कहा "घबराओ मत। तुम्हारी बहन की शादी जल्दी ही किसी अच्छे युवक से होगी।"

दूसरे ही दिन राजधानी से राजा के आस्थान में काम करनेवाले चंद्र की शादी रतन की बहन से कराने का प्रस्ताव लेकर कुछ लोग आये। चंद्र राजा का विश्वासपात्र कर्मचारी था। इसलिए नागेश ने हस्तक्षेप नहीं किया।

गाँव भर में प्रचार हो गया कि महादेव की बातें खाली नहीं जातीं। ग्रामीण अपनी तक़लीफ़ें उनसे बताते और उनके आशीर्वाद पाकर कष्टों से मुक्त होते।

ग्रामाधिकारी नागेश को भी यह मालूम हुआ। वह खुद महादेव से मिलने आया और कहने लगा, "आपके आगमन से गाँव पवित्र हो गया। प्रार्थना है कि आप मुझे भी आशीर्वाद दें।"

महादेव ने गंभीर स्वर में कहा, "किसी के माँगने पर मैं आशीर्वाद नहीं देता। भगवान के कहे अनुसार ही मैं करता हूँ। मैं असहाय हूँ। मैं तुम्हें आशीर्वाद नहीं दे सकता।"

"लगता है, आप मुझे आशीर्वाद देना नहीं चाहते। भगवान से मैं तो सिफ़ारिश नहीं करा सकता, पर भगवान जैसे राजा से सिफ़ारिश करवा सकता हूँ। देखता हूँ, आप तब कैसे टाल सकते हैं।" कहता हुआ नागेश वहाँ से चला गया।

शिवपुर के ग्रामीणों को जब यह बात मालूम
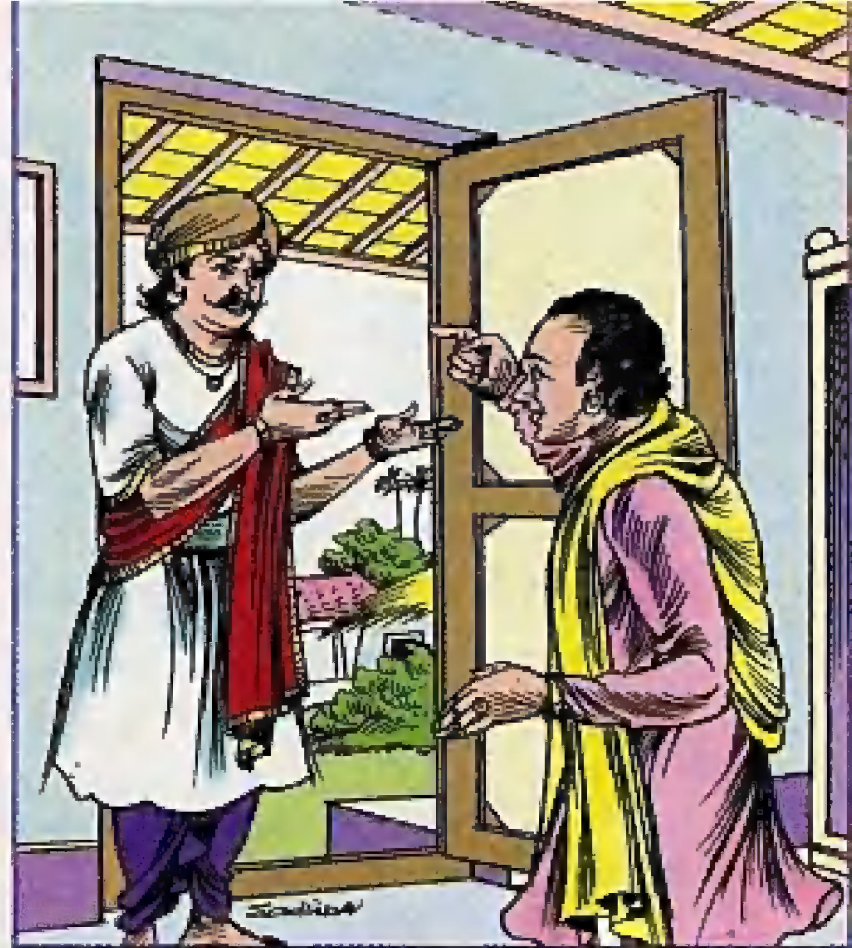
हुई, तब वे सबके सब महादेव के पास आये और बोले, "महोदय, नागेश में राजा को यहाँ ले आने की शक्ति है। आपका आशीर्वाद मिलने पर वह और बलाढ्य बन जायेगा और लोगों को ज़्यादा सताने लगेगा। आपकी वाणी में अद्‌भुत शक्ति है। उसे आशीर्वाद नहीं, शाप दीजिए।"

इस पर महादेव ने हँसकर कहा, "मैं अपनी वाणी की शक्ति का उपयोग आशीर्वाद के लिए ही करता हूँ, शाप देने के लिए नहीं। किन्तु अयोग्य को दिये जानेवाले आशीर्वाद, अपने आप शाप में परिणत हो जाते हैं।

महादेव के बारे में राजा को कभी-कभी कर्मचारियों से ख़बरें मिलती रहती थीं। राजा में यह जानने का कुतूहल जगा कि महादेव उसे क्या आशीर्वाद देंगे। उन्होंने शिवपुर जाने का

निश्चय किया और इसकी ख़बर ग्रामाधिकारी नागेश को भेजी। इसके दो दिनों के बाद शिवपुर में राजा के आगमन के संदर्भ में ग्रामीणों की एक सभा हुई। वहाँ नागेश ने, महादेव का समुचित आदर-सत्कार किया और कहा, ''महात्मा, आपका आशीर्वाद अचूक होता है। अतः आप मुझे और राजा को भी आशीर्वाद दीजिए।''

महादेव ने राजा को सविनय प्रणाम किया और कहा, ''दूसरों की भलाई करनेवाले आशीर्वाद देने के योग्य होते हैं, न कि आशीर्वाद पाने के। सच पूछा जाये तो बड़े लोगों के सत्कार्य ही आशीर्वाद बन जाते हैं।''

राजा ने नाराज़ होकर कहा, ''हम आपके आशीर्वाद की माँग करते हैं। आप स्पष्ट बता दीजिए कि आप हमें आशीर्वाद देंगे या नहीं।''

महादेव ने सविनय कहा, ''मेरे आशीर्वाद पर आपको अपार विश्वास है, परंतु कभी-कभी कुछ लोगों के लिए आशीर्वाद शाप बन जाते हैं। नागेश इसके लिए अगर सन्नद्ध हो तो उसे आशीर्वाद देने में मुझे कोई आपत्ति नहीं।''

नागेश ने कहा, ''मैं सन्नद्ध हूँ।'' ''तो सुनिये। नागेश ने ग्रामीणों के साथ जो किया, उससे दुगुना उसे प्राप्त होगा। यह मेरा आशीर्वाद है।'' महादेव ने कहा।

यह सुनते ही नागेश का चेहरा फीका पड़ गया। उसे ज्ञात था कि महादेव का आशीर्वाद अचूक है, इसलिए गिड़गिड़ाते हुए उसने राजा से कहा, ''प्रभु, मुझे माफ़ कर दीजिए, मुझे महादेव का आशीर्वाद नहीं चाहिए। उनसे कहिये कि वे आशीर्वाद को वापस ले लें।''

राजा को इन बातों से यह रहस्य जानने में देर नहीं लगी कि नागेश कैसा आदमी है। उन्होंने उसी क्षण नागेश को ग्रामाधिकारी के पद से हटा दिया और महादेव से सविनय कहा, ''ऐसे दुष्ट को मैंने ग्रामाधिकारी बनाया, इसलिए मेरे लिए भी आपका आशीर्वाद शाप में बदलने की संभावना है। इसलिए मैं आपसे आशीर्वाद माँगने का साहस नहीं करूँगा। अब से आप ही शिवपुर के ग्रामाधिकारी का भार संभालेंगे और यहाँ की जनता को आशीर्वाद देते रहेंगे।''

माया सरोवर

17
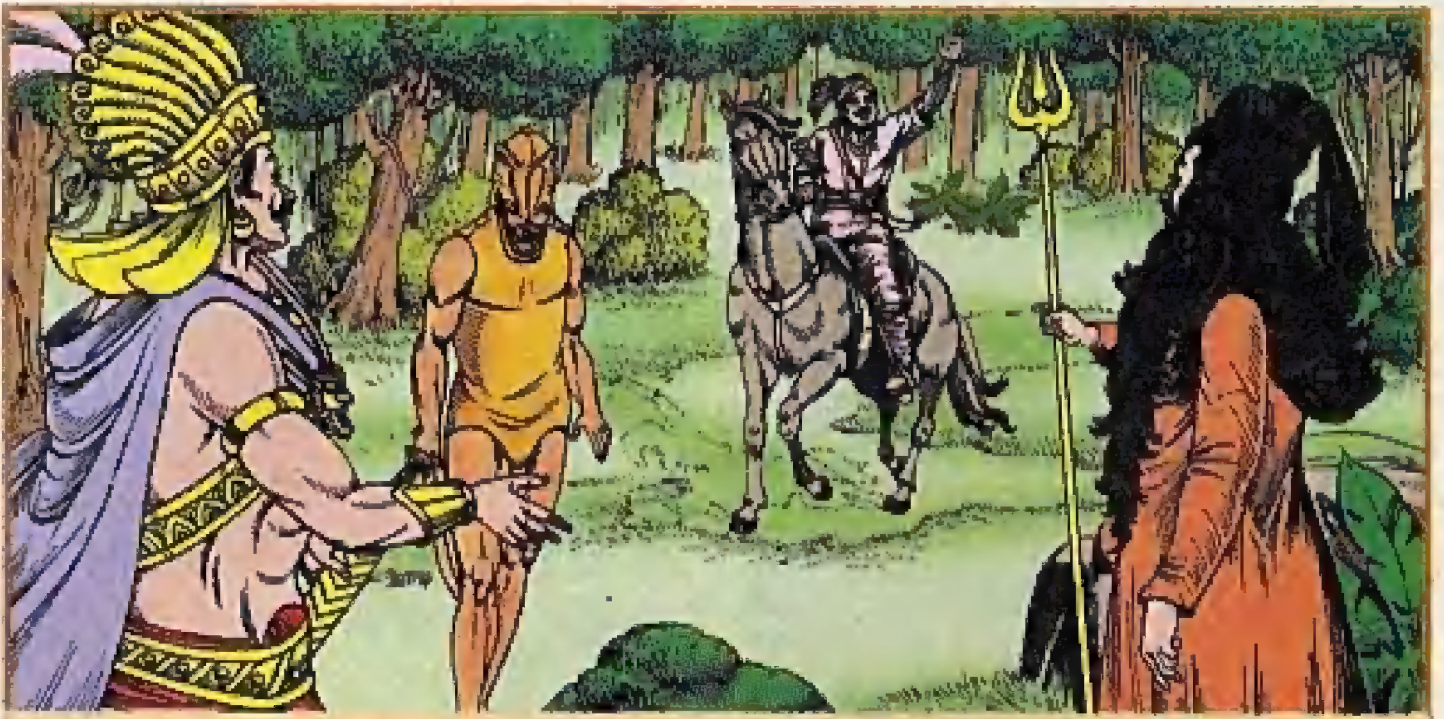
(माया सरोवरेश्वर जब नरभक्षी लोगों के हाथ में पड़ जाता है, तभी सिद्धसाधक वहाँ पर पहुँच जाता है। अपने मालिक की रक्षा करने के प्रयत्न में मकरकेतु सिद्धसाधक के सेवक जलवृक राक्षस को घायल कर देता है। नरभक्षी लोग जब उन्हें बन्दी बनाने का प्रयत्न करते हैं, उसी समय कुछ अश्वारोही वहाँ पर पहुँच जाते हैं। उसके बाद...)

सिद्धसाधक ने ज्यों ही अपने पैनी शूल को माया सरोवरेश्वर के वक्ष पर टिका दिया, भय के मारे वह काँप उठा और बोला, "यह तो अधर्म है! कोई भी वीर अपने शत्रु को असावधान देख उसे मारने का प्रयत्न नहीं करता।"

दूसरे ही क्षण सिद्धसाधक अपने शूल को पृथ्वी पर टिकाकर बोला, "मैं एक साधारण वीर नहीं हूँ, महावीर हूँ। तुम अपनी तलवार निकालो, मैं तुम्हारा पराक्रम देखना चाहता हूँ।"

इस पर माया सरोवरेश्वर ने अपने अनुचर मकरकेतु की ओर नज़र दौड़ाई। इस बीच अश्वारोहियों का नेता प्रवेश करके उनके सामने घोड़े से उतर पड़ा।

सिद्धसाधक क्रोधित हो उठा और उसकी ओर देखते हुए गरजकर बोला, "तुम कौन हो? हमारे झगड़े में तुम नाहक़ क्यों दख़ल देना चाहते हो?"

अश्वारोहियों का नेता इस प्रश्न के उत्तर में

अवहेलनापूर्वक हँसने को हुआ, पर नर वानर तथा जलग्रह को देख डर गया। तब धीमे स्वर में उत्तर दिया, ''इसके पूर्व मैंने जो चेतावनी दी, उससे तुम समझ गये होगे कि मैं कौन हूँ? और किनके आदेश पर यहाँ पहुँचा हूँ?''

''मैंने तुम्हारी चेतावनी ठीक से नहीं सुनी ! मैं अपने दुश्मन माया सरोवरेश्वर को भागने से रोकने के प्रयत्न में था। अब बताओ, इन घोड़ों या खच्चरों पर सवार तुम कौन हो?'' सिद्धसाधक ने पूछा।

अश्वारोहियों के नेता ने सिद्धसाधक की ओर एक बार आपाद मस्तक दृष्टि दौड़ाकर कहा, ''ओह, तुम हो? तुम तो सिद्धसाधक हो न? कुछ दिन पूर्व तुमने हिरण्यपुर में श्मशान के पहरेदार का सर काट डाला था, इस अपराध में तुम एक और व्यक्ति के साथ हमारे राजा के यहाँ ले जाये गये थे? यह बात सही है न?''

''तुम तो मेरा परिचय जानते हो ! पर तुम्हारा नाम मुझे याद नहीं आ रहा है।'' सिद्धसाधक ने कहा।

''मेरा नाम वीरसेन है। पर यह बताओ कि महाराजा कनकाक्ष के पुत्र-पुत्री की खोज में तुम्हारे साथ निकला जयशील नामक वह युवक है कहाँ?'' वीरसेन ने पूछा।

''जयशील हंसों के रथ पर आसमान में कहीं उड़ते होंगे। अच्छी बात, तुम जरा हट जाओ ! वीर की भांति डींग मारनेवाले इस कायर जल मानव का मुझे अंत करना है।'' इन शब्दों के साथ सिद्धसाधक ने अपना शूल ऊपर उठाया।

''मैं यहाँ पर ख़ून-ख़राबी सहन नहीं कर सकता।'' इन शब्दों के साथ वीरसेन ने अपने अश्वारोही अनुचरों को इशारा किया।

अश्वारोही तलवार लिये सिद्धसाधक की ओर बढ़े, इस बीच सिद्धसाधक ने चारों तरफ़ एक बार नज़र दौड़ाकर वीरसेन से कहा, ''हमारे चारों तरफ़ कई दिनों से भूख-प्यास से तड़पनेवाले नरभक्षी लोग फैले हुए हैं। चाहें तो वे लोग तुम्हें तथा तुम्हारे अश्वारोहियों का पल भर में सफाया कर सकते हैं। इससे नरभक्षियों का ही भला होगा। हम लोगों की हानि होगी।''

''भले-बुरे की बात मैं कुछ नहीं जानता। यहाँ से थोड़ी ही दूर पर राजा कनकाक्ष पड़ाव डाले हुए हैं। तुम सब लोग वहाँ पर आ जाओ। वहीं पर निर्णय होगा।'' वीरसेन ने कहा।

सिद्धसाधक ने वीरसेन की ओर क्रोध भरी दृष्टि दौड़ाकर कहा, ''यह तुम्हारी आज्ञा है या विनती? मैं महाकाल की आज्ञा को छोड़ और किसी की भी आज्ञा का पालन नहीं करता।''

जलवृक राक्षस ने भाँप लिया कि उसका मालिक अश्वारोहियों के सरदार पर नाराज़ है। उसने अपना गदा कंधे पर रखकर ज़मीन पर पैर पटक दिया और ज़ोर से हुंकारा। नर वानर ताल ठोंकते हुए गरज पड़ा, जिससे सारा जंगल गूँज उठा। उन विकृत आकृतिवालों और उनके अट्टहासों को देख एक आश्विक का घोड़ा भड़क उठा और अपनी पिछली टांगों पर सीधा खड़ा हो गया। तब उसका सवार नीचे गिर पड़ा, और घोड़ा भड़ककर दूर भाग गया।

इसे देख भय कंपित हो वीरसेन सम्मानपूर्वक सिद्धसाधक से बोला, ''महाशय, आप भी मेरे जैसे हिरण्यपुर के नागरिक हैं। आप महाराजा के दर्शन करने क्यों नहीं चलते?''

इस पर परमानंदित हो सिद्धसाधक बोला, ''तुमने जो कहा, सो ठीक ही है! चलो, मैं भी राजा के पास चलता हूँ। पर साथ ही हमें इन नर भक्षियों तथा सरोवर के दुष्टों को भी उनके पास ले जाना है।'' पर माया सरोवरेश्वर तथा मकरकेतु को वहाँ पर न पाकर वह चौंक पड़ा और पूछा, ''ये दुष्ट कहाँ भाग गये?''

उसी वक़्त सारे नर भक्षी एक साथ ठठाकर हँस पड़े। उनका नेता शेरसिंह और वृद्ध पुजारी गणाचारी आगे आकर सिद्धसाधक से बोले,

''जब तुम और ये घुड़ सवार झगड़ा कर रहे थे, तब मौक़ा पाकर ये दोनों चुपके से जंगल में खिसक गये। उन्हें पकड़ने के लिए हमारी जाति के लोग उनके पीछे गये हैं।''

''तुम लोगों ने मुझे क्यों नहीं बताया कि वे दोनों भाग रहे हैं? उनके बन्दी हो जाने तक तुम दोनों हमारे बन्दी बनकर रहोगे, समझे?'' यों कहकर सिद्धसाधक ने जलवृक राक्षस को आदेश दिया, ''जलवृक! इन दोनों को ले जाकर एक घोड़े पर रस्सों से बांध दो।''

जलवृक राक्षस ने बिजली की गति से जाकर शेरसिंह तथा बूढ़े गणाचारी को पकड़ लिया। एक घोड़े पर सवार हुए व्यक्ति के उतरने के पहले उसे अपनी कोहनी से मारकर दूर गिरा दिया और उन दोनों को घोड़े की पीठ पर बांध दिया।

इसके बाद सिद्धसाधक वीरसेन से बोला,

"तुम आगे चलते हुए मुझे रास्ता दिखाओ, हम सब राजा कनकाक्ष के पास जाकर उनके दर्शन कर लेंगे।" यों कहकर साधक ने नर वानर को हाँक दिया।

अश्वदल के नेता ने अपने अनुचरों को राजा कनकाक्ष के पड़ाव की ओर बढ़ने का आदेश दिया। उनके पीछे नर वानर पर सवार सिद्धसाधक भी चल पड़ा। उसी समय जंगल में एक दूसरे स्थान पर हंसों के रथ पर जानेवाले जयशील और उसके मित्रों को अचानक प्राण के डर से भागती हुई एक युवती दिखाई दी। वह पीछा करते हुए एक बाघ से बचते पेड़ों के तनों की परिक्रमा कर रही थी और जहाँ-तहाँ डालियों को पकड़कर ऊपर चढ़ने की कोशिश करती इधर-उधर बेतहाशा दौड़ रही थी।

हंसों के रथ पर सवार वैद्यदेव नामक देवशर्मा ने सर्व प्रथम उस दृश्य को देखा। वह पल भर के लिए भय से काँप उठा। तब बगल में बैठे जयशील का कंधा पकड़कर झकझोरते हुए बोला, "जयशील! बाघ के द्वारा पीछा की जानेवाली उस युवती को देखो ! वही कांचनमाला है। माया सरोवरेश्वर के सेवकों द्वारा अपहरण की गई राजा कनकाक्ष की पुत्री। बताओ, हम अब क्या करें?"

जयशील उस प्रदेश को देखते रथ पर खड़ा होकर रथ सारथी से बोला, "सुनो, तुम तुरंत रथ को नीचे उतार दो।"

अंगरक्षक ने सर झुकाकर नीचे के विशाल वृक्षों को देखते हुए कहा, "महाशय! यहाँ पर रथ को उतारना संभव नहीं है। थोड़ी दूर और जाकर उस खाली मैदान में रथ उतार देता हूँ।"

इस पर क्रोध में आकर जयशील ने कहा, "अरे मूर्ख, यह सही है कि तुम रथ को एक सुरक्षित स्थान में ले जाकर वहाँ उतार दोगे, मगर इस बीच राजकुमारी बाघ का आहार बन जाएगी। झट से रथ को थोड़ा नीचे ले जाओ। मैं पेड़ की डालों पर कूदकर राजकुमारी को बचाने का प्रयत्न करूँगा।"

जयशील का आदेश पाकर अंगरक्षक ने हंसों के कंठों में बंधे रस्सों को नीचे की ओर खींचा। हंसों ने पेड़ों की चोटियों तक रथ को उतार दिया। जयशील बिना विलंब किये रथ से कूद पड़ा और एक पेड़ पर गिरकर अपने दोनों हाथों से पेड़ की एक शाखा को पकड़

लिया। मगर उसके बोझ से पेड़ की वह शाखा नीचे गिर पड़ी।

पेड़ की डाल ज्यों ही ज़मीन को छू गई, त्यों ही जयशील ने अपने हाथ-पैर को टूटने से बचाने के लिए पाल्थी मारकर अपनी रक्षा कर ली। उस वक़्त कांचनमाला का पीछा करनेवाला बाघ उस ध्वनि को सुनकर चौंक पड़ा और पीछे मुड़कर देखा। मौक़ा पाकर कांचनमाला निकट की एक डाल पकड़कर ऊपर रेंगने लगी। मगर इस बीच बाघ फिर से गरजकर उस पर आक्रमण करने को हुआ। जयशील को तलवार खींचने का समय न था, अतः तेजी के साथ दौड़कर उसने बाघ की पिछली टांगों को पकड़ लिया और उसे खींचकर ज़ोर से दूर फेंक दिया।

कांचनमाला पेड़ की डालों में हवा के झोंकों के साथ झूलने लगी। फिर जयशील को देख बोली, "महाशय, वक़्त पर आकर आप ने बाघ से मेरी रक्षा की, मैं आपके प्रति बड़ी कृतज्ञ हूँ।"

जयशील उस युवती के सौंदर्य पर चकित रह गया। वह अनेक दिनों से अपार यातनाएँ झेलकर भी आखिर राजा कनकाक्ष की पुत्री कांचनमाला को बचा सका, मगर उसका भाई कांचनवर्मा कहाँ है? उसने सोचा।

जयशील ने उस युवती से कहा, "मैं जानता हूँ कि तुम्हारा नाम कांचनमाला है। यह भी जानता हूँ कि तुम किस देश की राजकुमारी हो। तुम्हारा भाई कांचनवर्मा कहाँ पर है? तुम

हंसों के रथ से नीचे गिरकर अपने प्राण कैसे बचा पाई?"

जयशील यों बात कर ही रहा था, इस बीच कांचनमाला पेड़ की डालों पर से नीचे उतर आई। उसे इस बात का आश्चर्य हुआ कि यह साहसी और सुंदर युवक मेरा परिचय कैसे जान पाया, फिर धीमी आवाज़ में बोली, "महाशय, मैं भाग्यवश हंसों के रथ पर से एक नाले में गिर पड़ी, इसलिए बच गई। मेरे साथ रथ में स्थित सरोवरेश्वर और उसका रथ सारथी शायद इस जंगल में मेरे ही जैसे जीवित होंगे। मेरा भाई कांचनवर्मा इस वक़्त माया सरोवरेश्वर के महल में बंदी है।"

इस पर जयशील ने कहा, "मैं माया सरोवरेश्वर के बारे में थोड़ी-बहुत जानकारी रखता हूँ। उसके सेवक सर्पनख और सर्पस्वर

के साथ-साथ एक और प्रमुख व्यक्ति से भी मेरा परिचय हो चुका है। इस वक़्त मुझे माया सरोवर से तुम्हारे भाई को भी बंधन-मुक्त करना है। संभवतः वहाँ पर जाने का रास्ता तुम जानती होगी; लेकिन हमें पहले यहीं कहीं पर स्थित मेरे मित्र सिद्धसाधक से मिलना होगा।''

इसके बाद कांचनमाला जयशील के साथ चलने को तैयार हो गई, तभी जयशील के प्रहार से कमर टूटने के कारण बेहोशी की हालत में पड़ा बाघ होश में आया और उठकर दाढ़ें फैलाकर ज़ोर से गरज उठा, फिर उन पर आक्रमण करने के प्रयास में धम्म से नीचे गिर पड़ा।

जयशील हाथ में तलवार ले बाघ की ओर बढ़ता हुआ बोला, ''चाहे जैसा भी खूँख्वार जानवर हो, घायल हो जाने के बाद उसे पीड़ा की हालत में छोड़कर नहीं जाना है, मैं अभी इसका सर काट डालूँगा।''

''यह भी कैसा भयंकर बाघ है ! आपके आने में थोड़ा भी बिलंब हो जाता तो यह मेरी गर्दन चबाकर मुझे खा गया होता !'' इन शब्दों के साथ कांचनमाला जयशील के पीछे-पीछे बाघ के निकट पहुँची।

तब तक घनी झाड़ियों की ओट में जलग्रह पर सवार हो यह सारा दृश्य देखनेवाला माया सरोवरेश्वर सर घुमाकर पास में ही घोड़े पर सवार मकरकेतु से बोला, ''जयशील को बंदी बनाने का यही एक अच्छा मौक़ा है। तुम तुरंत कमलनालों की रस्सी फेंककर उसकी गर्दन में डाल दो।''

''महाराज, यह जयशील एक महा सत्व है। इसके साथ दुश्मनी मोल लेना हमारे लिए हितकर नहीं है।'' यों समझाकर मकरकेतु ने रोनी सूरत बनाई।

''छीः कायर कहीं का !'' यों डांटकर माया सरोवरेश्वर ने मकरकेतु के हाथ से एक मज़बूत रस्सी को खींचकर ले लिया और जलग्रह को आगे बढ़ाकर रस्सी के फँदे को हवा में दो-तीन बार घुमाकर जयशील के कंठ की ओर फेंका। *(क्रमशः)*

राजा विक्रम और वेताल की नई कथाएँ

स्वास्थ्य रहस्य

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास लौटा। पेड़ से शव को उतारा और उसे कंधे पर डालकर यथावत् श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर का वेताल कहने लगा, ''राजन्, तुम्हारे परिश्रम को देखते हुए तुमपर मुझे बड़ी दया आती है। पर इतना तो अवश्य बताना कि यह सब कुछ अपने लिए कर रहे हो या किसी दूसरे के लिए। मैंने कितने ही बहादुरों और कुशल व्यक्तियों को देखा, जो स्वलाभ के लिए घोर परिश्रम करते हैं। परंतु कभी-कभी ऐसे लोगों का मन भी उचट जाता है और बिना लक्ष्य साधे ही बीच में काम करना छोड़ देते हैं। तुम्हारे हठ को देखते हुए मुझे लगता

है कि परिस्थितियों से प्रभावित होकर, किसी को दिये गये वचन को निभाने के लिए इतने कष्ट झेल रहे हो। अपात्र दान जितना बुरा है, उतना ही बुरा है, अपात्र को दिया गया वचन। उदाहरणस्वरूप मैं तुम्हें पुष्कर और विलास की कहानी सुनाऊँगा। अपनी थकावट दूर करते हुए उनकी कहानी ध्यान से सुनना।'' फिर वेताल उनकी कहानी यों सुनाने लगा।

पुष्कर दिन भर बड़ी मेहनत करता था, फिर भी वह अपना पेट नहीं भर पाता था। अपने हीन जीवन को लेकर वह सदा चिंताग्रस्त रहता था।

एक दिन विवाह मंडप में पुष्कर को काम मिला। कुएँ से पानी खींचना, बरतन मांजना आदि उसके काम थे। दिन भर मेहमान आते-जाते रहे। जो भी आते थे, उन्हें स्वादिष्ट पकवान खिलाये जाते थे। भोजन-पदार्थ बड़े ही स्वादिष्ट थे। जो भी खाता था, उनकी वाहवाही किये बिना लौटता नहीं था। बीच-बीच में पुष्कर को भी खाने को कुछ न कुछ दिया जाता था। इसलिए उसे सौंपे गये काम वह बड़ी फुर्ती के साथ करता था।

उसने रसोइयों की प्रशंसा करते हुए कहा, ''तुम लोगों की रसोई कितनी स्वादिष्ट है! हर रोज़ तुम लोगों को कहीं न कहीं यह काम मिल जाता होगा। मुझे भी अपने साथ लेते जाओ। जो भी काम मुझे सौंपा जायेगा, मैं ठीक तरह से करूँगा। भरपेट स्वादिष्ट खाना मिलता रहेगा।''

इसपर रसोइये हँस पड़े और बोले, ''लगता है, तुम भोजनप्रिय हो। हम तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं कर सकते, क्योंकि हमें यह काम हर रोज़ नहीं मिलता। अलावा इसके, यह काम हम लोगों में से ही कोई न कोई कर देता है। अगर स्वादिष्ट भोजन करना चाहते हो तो तुम्हें किसी बड़े घर में जन्म लेना चाहिए।''

जब पुष्कर ने पहली बार सुना कि बड़ों के घर में हर दिन इसी प्रकार का स्वादिष्ट भोजन बनता है, तो उसे आश्चर्य हुआ। उसके आश्चर्य को देखते हुए रसोइयों ने पूछा, ''क्या अब तक तुमने बड़ों के घर में काम नहीं किया? वे लोग घर में भी रेशमी कपड़े ही पहनते हैं। स्वादिष्ट खाना खाते हैं। मुलायम बिस्तरों पर सोते हैं। सभी सुखों का अनुभव करते हैं।'' यों उन्होंने और अनेक विवरण दिये।

ये सारी बातें सुनकर पुष्कर को अपना जीवन व्यर्थ लगने लगा। उसमें बड़ा बनने की इच्छा जाग उठी, चाहे इसके लिए कोई भी रास्ता

अपनाना क्यों न पड़े। गाँव के बाहर स्थित मठ में एक नया साधु आया हुआ था। वह साधु से मिला और अपना दुखड़ा सुनाया।

साधु ने उसकी बातों पर हँसते हुए कहा, "पुत्र, वृक्ष एक ही स्थल पर स्थिर रूप से रहता है और मीठे फल देता है। माँ नदी कलकल करती प्रवाहित होती हुई देश भर में घूमती है और मीठा जल प्रदान करती है। इस सृष्टि में सबका अपना-अपना ढंग है। अधिक या कम की कोई बात नहीं, जिन्हें तुम सुख समझ बैठे हो, वे सुख नहीं हैं। जिन्हें तुम कष्ट समझते हो, वे कष्ट भी नहीं हैं। परंतु एक बात सच है। इस संसार में बिना परिश्रम किये किसी को भी कुछ नहीं मिलता, उसका पेट नहीं भरता। यह सारा प्रबंध भगवान का ही किया हुआ है।

पुष्कर पर इन बातों का कोई असर नहीं हुआ। उसने गिड़गिड़ाते हुए साधु से विनती की कि उसका जन्म किसी बड़े घर में हो।

तब साधु ने उसे एक जड़ी-बूटी दी और कहा, "पास ही के गाँव में विलास नामक एक धनाढ्य है। उसकी पत्नी के मरे दो साल हो गये। उसके दो बेटे व्यापार के सिलसिले में विदेश गये हुए हैं। रिश्ते में बहन लगनेवाली एक स्त्री उसकी देखभाल कर रही है। तुम उसके पास जाओ। तुम दोनों एक साथ इस जड़ी-बूटी को हाथ में लो और इच्छा करो कि तुम दोनों एक-दूसरे के शरीर में प्रवेश करना चाहते हो। इसे परकाय प्रवेश कहते हैं। दोनों के शरीर बदल जायेंगे।"

"स्वामी, आप कहते हैं कि विलास धनाढ्य है, भाग्यवान है। क्या वे मेरे शरीर में प्रवेश करने के लिए राजी होंगे?" संदेह भरे स्वर में पुष्कर ने पूछा।

"अवश्य मान जायेगा। इधर वह कुछ सालों से तुम्हारे जैसे आदमी की खोज में है। परंतु यह काम करने के पहले खूब सोच लेना। तुम युवक हो। वह अधेड़ उम्र का है। इस परकाय प्रवेश का यह अर्थ हुआ कि तुम अपनी उम्र उसके हवाले कर रहे हो।" साधु ने उसे सावधान किया।

"मेरे लिए उम्र से भी प्रधान है, सुख। कौवे की तरह सदा जीवित रहने के बदले अच्छा यही होगा कि हंस की तरह छः महीने ही सही, ज़िन्दा रहूँ।" पुष्कर ने दृढ़ स्वर में कहा।

"रूपों को देखकर धोखे में मत आना। इस संसार को कौवे से क्या नहीं मिला और हंस से क्या मिल गया? मानव को खूब सोचने के बाद
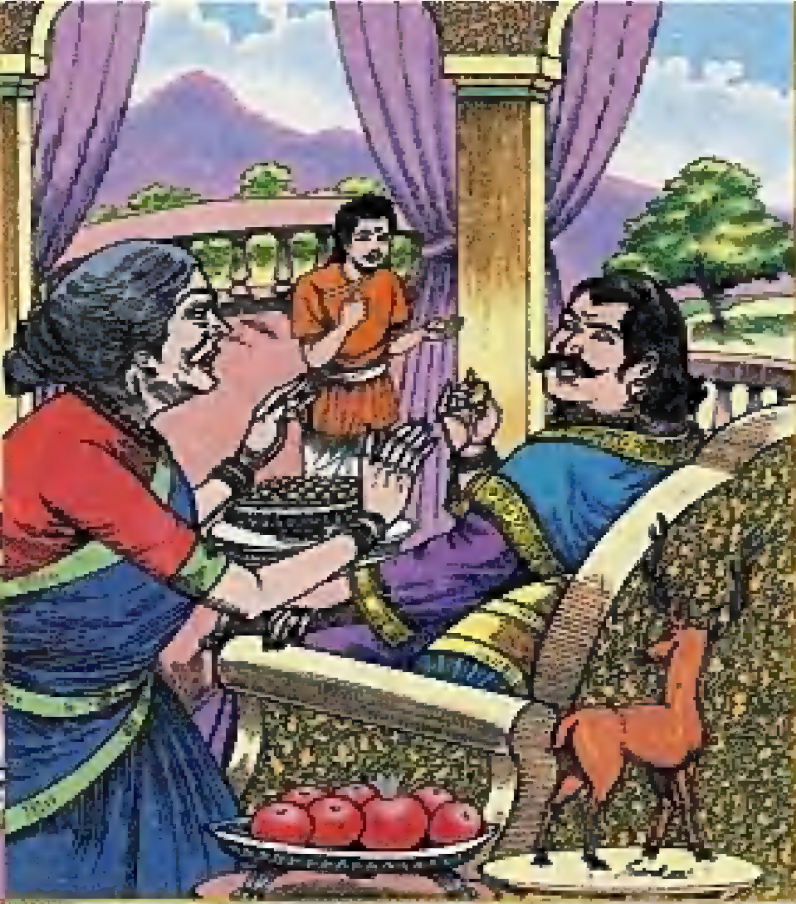
ही किसी निर्णय पर आना चाहिए।'' यों साधु ने फिर एक बार पुष्कर को सावधान किया।

उसने उसकी बातों की कोई परवाह नहीं की और दूसरे ही दिन विलास से मिलकर उसने अपनी इच्छा प्रकट की। विलास ने खुश होते हुए कहा, ''मैं तुम जैसे आदमी की ही प्रतीक्षा में था। अब से मेरा शरीर तुम्हारा है और तुम्हारा शरीर मेरा। जब तक तुम ऐसा चाहोगे, ऐसे ही बने रहेंगे।''

इसके बाद वे जड़ी-बूटी की सहायता से एक-दूसरे के शरीर में प्रवेश कर गये। परकाय प्रवेश हो गया। तब से पुष्कर उस घर का मालिक बन गया और विलास उस घर का नौकर।

शरीर के परिवर्तन के बाद पुष्कर में उत्साह भर आया। मिठाई खाने की उसकी तीव्र इच्छा हुई। उसने विलास की बहन को बुलाकर कहा, ''बहना, आज मिठाई बनवाना।''

विलास की बहन ने रसोइये से बीस लड्डू बनवाये और पुष्कर के अंदर के विलास के सामने रखते हुए कहा, ''अरे पुष्कर, जिस दिन से तुम काम पर लग गये, उसी दिन से तुम्हारा भाग्य चमका। तुम लड्डू जितना चाहो, खाओ पर यह काम मालिक की आँखों के सामना करना। इधर कुछ समय से वे किसी बीमारी के शिकार हैं, जिसका इलाज भी नहीं हो सका। उनसे जो खाया नहीं जाता, नौकरों को खाते हुए देखकर उन्हें मज़ा आता है।''

पुष्कर के शरीर के अंदर का विलास तुरंत चार लड्डू खा गया और कहने लगा, ''वाह, ऐसी मिठाई को खाये ज़माना गुज़र गया।''

विलास के शरीर के अंदर के पुष्कर ने अपने आप कहा, ''जिस शरीर में मैंने परकाय प्रवेश किया, वह शरीर भले ही कितने ही रोगों का घर क्यों न हो, मिठाई खाये बिना मुझसे रहा नहीं जायेगा।'' उसने यों कहते हुए दो लड्डू खा लिये।

विलास की बहन ने उसे रोकते हुए कहा, ''भैय्या, तुमने यह क्या कर दिया? जो हुआ, सो हो गया। अब नदी तट तक तेज़ी से पैदल जाना और लौट आना। वैद्य हमेशा कहते रहते हैं कि लगातार व्यायाम करते रहने से जो भी खाना चाहते हो, खा सकते हो। पर तुम तो एकदम आलसी हो। थोड़ी दूर भी पैदल नहीं जाते। यह सुस्ती अच्छी नहीं।''

दोनों नदी तट की ओर तेज़ी से पैदल गये और लौट आये। उस समय विलास के रोगी शरीर

में रहनेवाले पुष्कर को एक-एक करके दिक़्क़त महसूस होने लगी। इसके पहले वह कड़ी मेहनत करने के बाद भी अपना पेट भर नहीं पाता था। पर अब जो भी वह खाना चाहे खा सकता है, परन्तु उसे पचाने के लिए एकमात्र उपाय रह गया है व्यायाम। इसीलिए वह हर दिन तरह-तरह के व्यायाम करने लगा। यों कुछ महीनों तक व्यायाम करने के बाद पुष्कर के शरीर की बीमारियाँ क्रमशः कम होने लगीं।

उधर पुष्कर के शरीर में रह रहे विलास को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। शरीर में ताक़त होते हुए भी नौकर का काम करने में उसे कोई अभिरुचि नहीं थी। हमेशा बैठकर खाते रहने की उसकी इच्छा होती थी। दिन जैसे-जैसे गुज़रते गये, विलास के शरीर के अंदर का पुष्कर, विलास को भारी काम सौंपता था और अपनी सेवाएँ भी करवाता था।

एक दिन पुष्कर के अंदर के विलास ने आक्रोश-भरे स्वर में कहा, ''मेरे कारण तुम धनी हुए हो। कृतज्ञतापूर्वक तुम्हें मेरा आदर करना चाहिए। घर के काम करने के लिए किसी और नौकर को रख लो। मुझे सुखी रहने दो।''

पुष्कर ने उसकी माँग को अस्वीकार करते हुए कहा, ''जैसे मैं चाहूँगा, काम करते रहो, नहीं तो हम फिर से शरीर बदल लेंगे और अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारेंगे।''

काम करने में तक़लीफ ज़रूर होती थी, पर युवक पुष्कर के शरीर में होने के कारण विलास

उस शरीर को जल्दी छोड़ने के पक्ष में नहीं था।

यों एक साल गुज़र गया। साधु उन दोनों से मिलने आया। दोनों ने साधु को सविनय प्रणाम किया और अपने-अपने अनुभवों का ब्योरा दिया। तब साधु ने पुष्कर से कहा, ''एक साल तक तुम विलास के शरीर में रहे। धन जो-जो सुख देता है, उन सबका अनुभव किया। अब विलास का शरीर छोड़ दो और अपने शरीर में लौट जाओ।''

पुष्कर ने फ़ौरन कहा, ''मैं इसके लिए सन्नद्ध हूँ। पर मेरी एक शर्त है। इसके बाद विलास को मुझे अपने घर का नौकर बनाये रखना होगा।''

इस पर विलास ने नाराज़ होते हुए कहा, ''स्वामी, अवश्य ही मैं इसे अपना नौकर बनाकर रखता, परंतु अब मेरे शरीर में जो पुष्कर है, वह कृतघ्न है। घर का मालिक होते हुए भी इसने सब प्रकार के काम-काज मुझसे करवाये, तरह-तरह

से इसने मुझे सताया। ऐसे कृतघ्न को कैसे नौकर बनाकर रखूँ? यह कैसे न्यायोचित होगा?

तब साधु ने कठोर स्वर में कहा, ''यह सर्वथा न्यायोचित है। तुम दोनों एक-दूसरे के कारण शारीरिक और मानसिक दोषों से विमुक्त हुए हो। पुष्कर कृतघ्न नहीं है,'' कहते हुए साधु ने जड़ी-बूटी की सहायता से दोनों को अपने-अपने शरीर में प्रवेश करवाया और आशीर्वाद देकर चला गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा विक्रमार्क से कहा, ''राजन्, साधु की बातों में न ही न्याय है, न ही नैतिक मूल्य। उसका कहना कि पुष्कर कृतघ्न नहीं है, क्या यह अवास्तविक नहीं? विलास और पुष्कर के बीच जो असली समस्या उठ खड़ी हुई, उसे भुलाकर लगता है, साधु ने अपने वाक्-चातुर्य से तात्कालिक रूप से इस समस्या का मार्ग सुझाया। मेरे संदेहों के उत्तर जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''साधु केवल महान शक्तियों का पुंज ही नहीं बल्कि मानव-स्वभाव का उत्तम ज्ञाता भी है। पुष्कर को उसने कृतघ्न नहीं माना, इसमें एक महान जीवन सत्य छिपा है। अधेड़ उम्रवाले विलास के शरीर में प्रवेश करने के बाद उसने जाना और पहचाना कि किन कारणों से वह रोगों का शिकार हुआ। विलासमय जीवन का वह दास हो गया। व्यायाम से वह कोसों दूर रहता था। उसके रोग का यही प्रधान कारण था। पुष्कर ने यह आरोग्य रहस्य जान लिया। वह नहीं चाहता था कि यौवन भरे उसके शरीर को यह रोग लग जाए, इसीलिए उसने अपने शरीर में रह रहे विलास से भी मेहनत करायी। घर के सब काम करवाये। ऐसा करने से अपने शरीर के प्रति जागरुकता बरतने का काम भी हुआ और साथ ही विलास में भी मेहनत करने की आदत पड़ी। यों पुष्कर ने अप्रत्यक्ष रूप से विलास का भला किया। इन कारणों से पुष्कर को कृतघ्न कहना कदापि न्यायसंगत नहीं।''

राजा का मौन भंग करने में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

आधार - 'बैरागी' की रचना

भारत की पौराणिक कथाएँ – १४
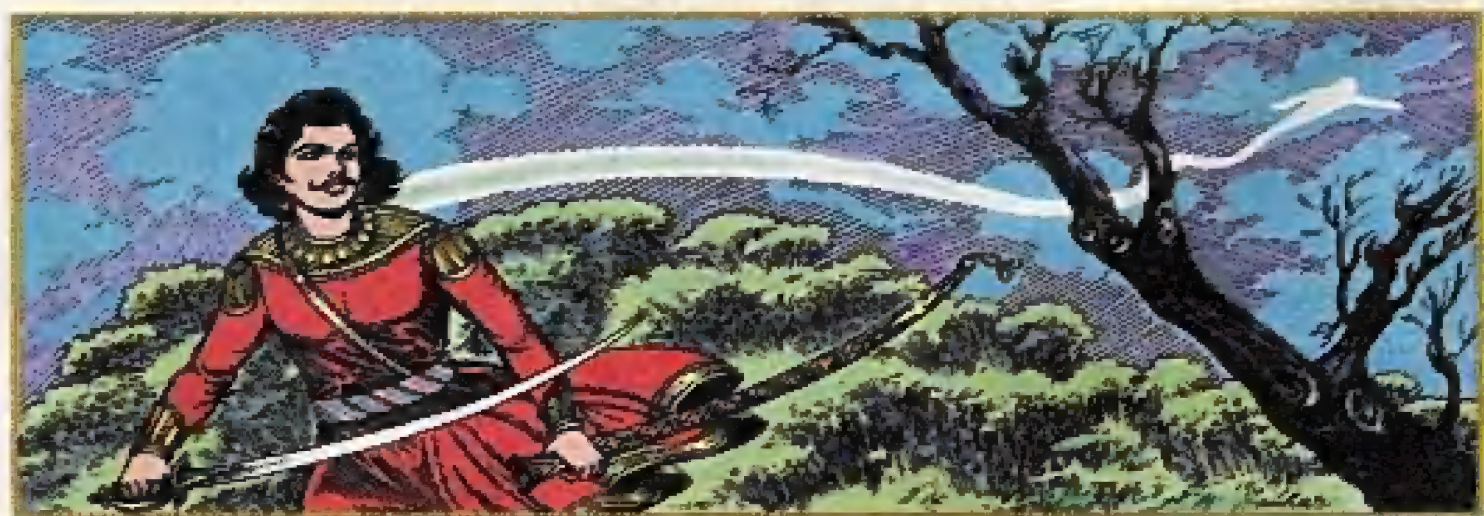
भाग्य के चमत्कार
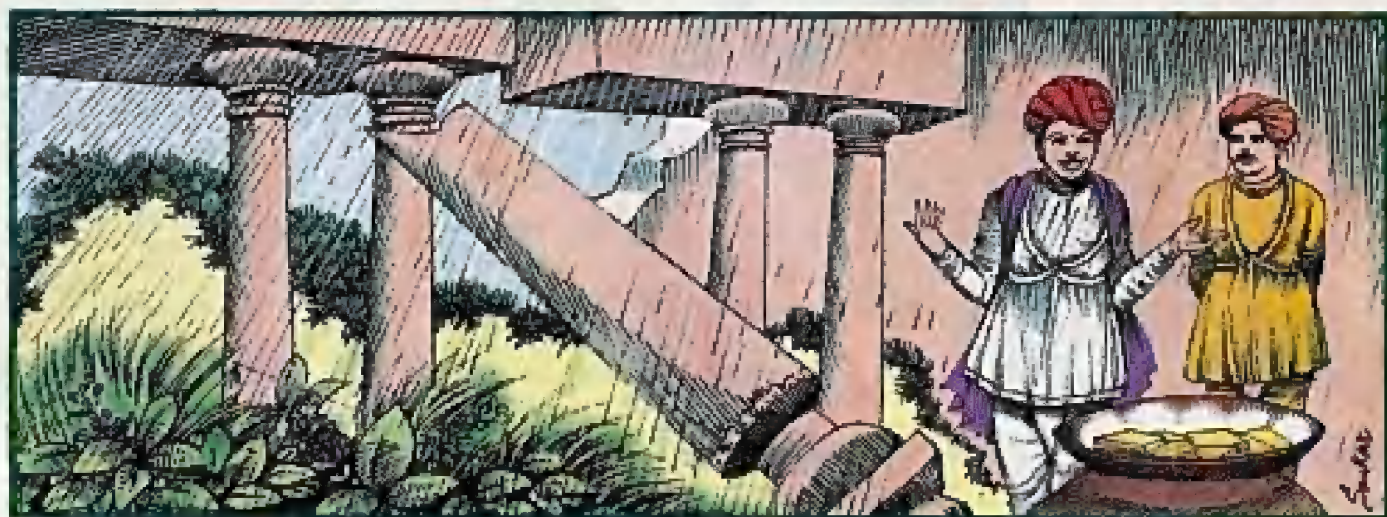
दोनों मित्र, जगन और सुकुमार, एक साथ शहर के लिए चल पड़े। जगन को अपने एक बीमार संबंधी को देखना था और सुकुमार को खरीदारी करनी थी। रास्ता लम्बा था इसलिए वे जंगल के छोटे रास्ते से जाने लगे।

कभी उस जंगल के स्थान पर एक किला था जो युद्ध में नष्ट हो गया था। खंडहर के चारों ओर घने वृक्ष और लताएँ फैल गई थीं।

जब दोनों मित्र खंडहर से गुजर रहे थे तब भारी वर्षा होने लगी। एक टूटी हुई छत के नीचे उन्होंने शरण ली। अचानक उनके सामने का एक टूटा स्तम्भ ढह गया। उसमें से सोने की ईंटों से भरा एक पात्र निकला। दोनों मित्र खुशी से झूम उठे। क्या खजाना आसमान से टपका!

''इसे कहते हैं किस्मत!'' जगन ने कहा, जिसने पहले देखा था। ''हमें इसे बाँट लेना चाहिए और अपनी-अपनी समृद्धि तथा दूसरों के कल्याण में खर्च करना चाहिए।''

''हाँ, ठीक, हमें यही करना चाहिए।'' सुकुमार ने कहा। ''लेकिन दिन में इसे घर ले जाना बुद्धिमानी नहीं होगी। यह पुराना पात्र उठाने पर टूट सकता है। अच्छा होगा हम रात को एक मजबूत थैला लेकर आयें और शहर से लौटते समय सोने को घर ले जायें।'' उसने सलाह दी।

जगन को यह प्रस्ताव युक्तियुक्त लगा। उन दोनों ने पात्र को एक गड्ढे में छिपा दिया। वर्षा रुकते ही वे शहर की ओर फिर चल पड़े और दोपहर तक वहाँ पहुँच गये। दोनों ने निश्चय

किया कि वे अपना-अपना काम समाप्त कर सूर्यास्त के समय धर्मशाला में मिलेंगे।

जगन अपने संबंधी से मिलने चला गया। लेकिन सुकुमार सीधा जंगल वापस आ गया। उसने सोने को एक बोरे में भरकर एक गड्ढे में छिपा दिया और उसके मुँह को पत्थर से ढक दिया। जिस पात्र में पहले सोना था उसे उसने मिट्टी से भर दिया। जब शहर आने लगा तो फिर वर्षा होने लगी, किन्तु वर्षा में भीगते हुए निश्चित समय पर धर्मशाले में पहुँच गया।

''तुम भीग कैसे गये?'' जगन ने पूछा। सुकुमार ने उत्तेजना के कारण इस प्रश्न पर विचार नहीं किया था। वह गला साफ करता रहा और फिर बहाना बनाते हुए बोला कि बहुत पसीना आने से उसके कपड़े गीले हो गये हैं।

''क्या तुमने खरीदारी कर ली?'' जगन ने सरलतापूर्वक पूछा। सुकुमार फिर गला साफ करता हुआ बोला कि वह खरीदारी का सामान अपने रिश्तेदार के घर छोड़ आया लेकिन सोना के लिए एक थैला ले आया है। मार्ग में सुकुमार ने बहुत उत्तेजित होने का बहाना किया। ''जगन,'' उसने कहा, ''तुमने सोने को पहले देखा है। तुम्हें ज्यादा सोना लेना चाहिए।''

''लेकिन हम लोगों को बराबर-बराबर हिस्सा लेना चाहिए और धन का एक भाग गाँव के लिए भी खर्च करना चाहिए। जैसा कि तुम जानते हो कि एक राजा ने सौ साल पहले हमारे गाँव के पास एक झील की खुदाई की थी। अब यह कीचड़ से भरा पोखरा मात्र रह गया है। हमें इसका जीर्णोद्धार कर देना चाहिए।'' जगन ने कहा।

''यह अच्छा विचार है।'' सुकुमार ने कहा।

जंगल तक पहुँचने में आधी रात हो गई। लेकिन यह क्या जगन ने देखा? सोने के स्थान पर पात्र मिट्टी से भरा था।

"इसे कहते हैं दुर्भाग्य, जगन! हम लोगों ने अपने पिछले जन्मों में किसी को अवश्य धोखा दिया होगा। इसीलिए विधाता ने हम लोगों को छला है। भाग्य ने हमें सोना दिखाया और जब उसे लेने लगे तो मिट्टी में बदल दिया!" सुकुमार अपना माथा पीटते हुए चिल्लाया।

जगन काफी समझदार था इसलिए उसे यह समझने में देर नहीं लगी कि उसके साथी ने क्या किया। लेकिन वह शान्त बना रहा और सुकुमार को सांत्वना देता हुआ बोला, "आखिर हम लोगों ने इसके लिए कौन-सा खून-पसीना बहाया! समझ लो, सपना देखा था। हम लोगों ने वास्तव में कुछ भी नहीं खोया, क्योंकि सोना हमारा नहीं था।"

सुकुमार ने तुरंत रोना-धोना बंद कर दिया।

दूसरे ही दिन सुकुमार अकेले जंगल जाकर सारा सोना घर ले आया। धीरे-धीरे उसके रहन-सहन के ढंग में अमीरी झलकने लगी। इसकी सफाई में कहता कि आजकल उसका व्यापार अच्छा चल रहा है। सिर्फ जगन को सचाई मालूम थी और वह कुछ नायाब ढंग से अपना हिस्सा वसूलने की योजना बना रहा था। उसने बैठने की मुद्रा में सुकुमार की मिट्टी की एक प्रतिमा अपने आंगन में बनवाई। उसे पालतू जानवरों का बहुत शौक था। अन्य छोटे प्राणियों के साथ-साथ हाल में उसने बंदर के दो बच्चे पाल रखे थे। वह प्रतिमा की गोद, कन्धों और सिर पर मूंगफली के दाने बिखेर देता और बंदरों को ढूँढ़कर खाने देता। वह इसे नियमित रूप से करने लगा।
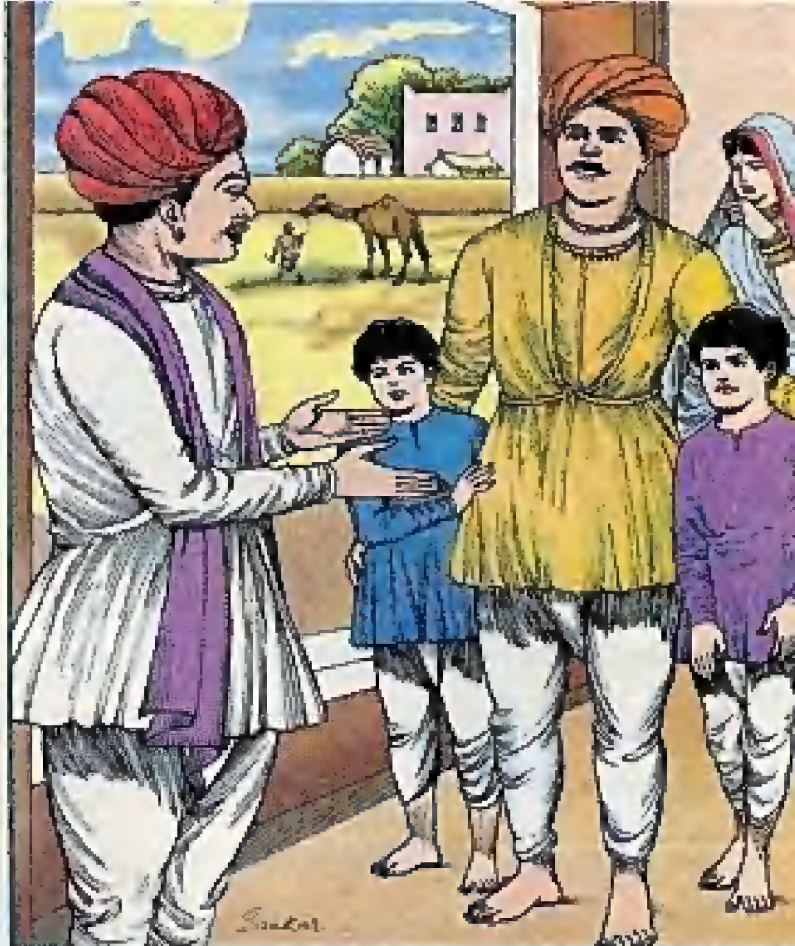
सुकुमार ने पत्नी के साथ कुछ दिनों के लिए तीर्थ यात्रा पर जाने का निश्चय किया। उसने जगन को साथ चलने का निमंत्रण दिया। लेकिन जगन ऐसी स्थिति में नहीं था। तब उसने जगन से अपनी अनुपस्थिति में अपने दोनों बच्चों की जिनकी उम्र छः और आठ वर्ष की थी, देखभाल करने का अनुरोध किया। जगन यह एहसान करने के लिए तुरंत तैयार हो गया।

सुकुमार ने बच्चों की अच्छी तरह देखभाल की। उसे जल्दी ही पता चल गया कि बच्चों को आम बहुत पसन्द हैं। "बच्चो! मेरे मामा के पास आमों का एक बड़ा बाग है। अच्छा होगा यदि तुम दो सप्ताह तक वहाँ रहो और जी भर के मीठे आम खाओ।" उसने सुझाव दिया। बच्चे खुशी से उछल पड़े। इस तरह बच्चों को एक दूर, साथ

ही सुरक्षित स्थान पर भेज दिया गया।

एक सप्ताह के बाद सुकुमार पत्नी के साथ लौट आया। सुकुमार ने जगन से मिलकर अपने बच्चों की देखभाल के लिए उसे धन्यवाद दिया और बच्चों को वापस घर भेज देने के लिए कहा। जगन बहुत उदास दिखाई पड़ा। "मेरे दोस्त", उसने सुकुमार को कुर्सी पर आराम से बैठाते हुए कहा, "हम लोगों से बेहतर कौन जानता है कि दुर्भाग्य कितना विनाश ला सकता है। एक बार इसने शुद्ध सोने को शुद्ध मिट्टी में बदल दिया और, एक बार और इसने दो सुंदर बच्चों को दो बंदरों में बदल दिया, लेकिन दो सुंदर बंदरों में !"

"क्या? क्या हमारे बच्चे बंदरों में बदल गये?" सुकुमार चीख पड़ा। "बिलकुल ठीक, लेकिन छोटे सुंदर बंदरों में। वे तुम्हें देखकर कितने खुश होंगे !" जगन ने कहा और उन दो बंदरों को वहाँ ले आया जहाँ सुकुमार बैठा था।

सुकुमार की प्रतिमा से मूंगफली के दाने झपटने के अभ्यस्त दोनों बंदर तुरंत सुकुमार की गोद में उछल कर चले गये और अपने प्रिय भोजन की खोज में उसका सिर और हाथ खरोचने लगे।

"देखो, ये बच्चे अपने पिता को कितना प्यार कर रहे हैं !" जगन ने टिप्पणी की।

सुकुमार निष्प्राण-सा हो गया। धीरे-धीरे उसने महसूस किया कि जगन यद्यपि भला आदमी है, लेकिन बेवकूफ नहीं है।

वह बिना कुछ बोले घर वापस गया और सोने का बोरा लेकर, जिसमें से उसने थोड़ा ही खर्च किया था उसके घर आया। चुपचाप उसने सोने को दो बराबर हिस्सों में बाँटा। जगन तुरंत सुकुमार को अपने मामा के घर ले गया। बच्चे आम के बाग में बड़े प्रसन्न थे। वे अनिच्छापूर्वक आये जिनमें अपने पिता के लिए कोई खास प्यार नहीं था जैसा कि बंदरों में देखा गया। सुकुमार उन्हें घर लेकर आ गया। एक अच्छी बात यह देखने में आई कि उसके बावजूद सुकुमार और जगन दोस्त बने रहे। वास्तव में सुकुमार को जब भी व्यापार में कोई समस्या आती तो इस विश्वास के साथ कि उसे समुचित सलाह मिलेगी, वह जगन से परामर्श लेता। *(जैन साहित्य से पुनर्कथित)*

मैला न करो

यह भिन्न प्रकार का रुमाल है। इसमें तुम्हें नाक साफ करने का या हाथ पोंछने का मन नहीं करेगा। यह चम्बा रुमाल है, एक उत्कृष्ट प्रकार की कसीदाकारी किया रुमाल जिसका नाम इसके मूल स्थान - हिमाचल प्रदेश में चम्बा पर रखा गया है।

इस क्षेत्र के शाही घरानों की और उच्च वर्ग की महिलाएँ इस कला में दक्ष थीं। घनी कसीदाकारी का वर्गाकार चम्बा रुमाल १८वीं और १९वीं शताब्दी में एक कलात्मक वस्तु के रूप में लोकप्रिय हुआ। इस अवधि में अनेक लघुचित्र के कलाकार मुगल साम्राज्य को छोड़कर हिमाचल प्रदेश के चम्बा, कांगड़ा और बशोली में बसने के लिए आ गये। धनी उच्च वर्ग की महिलाएँ इन कलाकारों से उन्हें पैसे देकर रुमाल पर कलात्मक आकृति की रूपरेखा बनवा लेतीं और स्वयं उन्हें रेशमी धागों की जटिल कसीदाकारी से भरती थीं।

विषय होता था महाभारत से लिया गया युद्ध का दृश्य, कृष्ण और गोपियाँ और दोनों पत्नियाँ बुद्धि और सिद्धि के साथ भगवान गणेश।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि १६वीं शताब्दी में गुरु नानक की बहन बीबी नानकी द्वारा कसीदाकारी किया रुमाल सबसे पुराना मौजूद रुमाल है। इसे पंजाब के होशियारपुर जिले के अजायबघर में सुरक्षित रखा गया है।
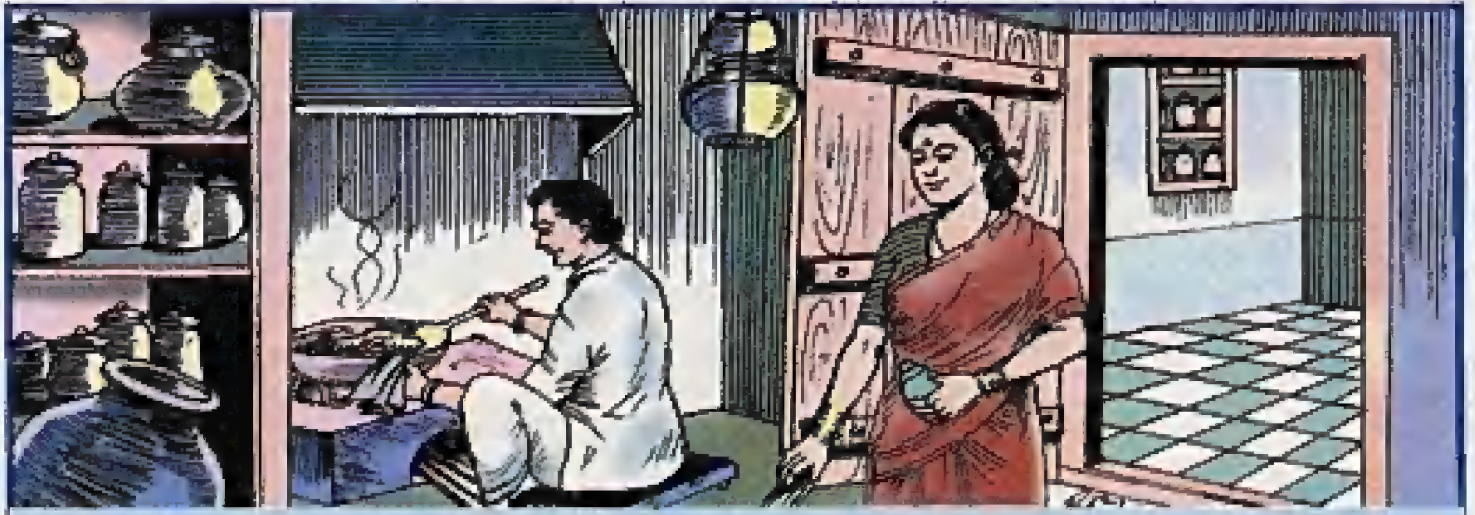
आधी थाली, पूरी थाली

सूरदास मेहनत करके अपनी जीविका चलाता था। वह कितनी भी मेहनत करता, चार-पाँच रुपयों से ज़्यादा कमा नहीं पाता। उसकी कमाई उसके खाने के लिए भी काफी नहीं होती। परंतु वह ज़्यादा से ज़्यादा कमाना चाहता था और आराम से ज़िन्दगी गुज़ारना चाहता था।

उस गाँव के एक धनी रंगनाथ की पत्नी सावित्री अचानक बहुत बीमार पड़ गयी। उस समय उनका बेटा और बहू मनौती पूरी करने काशी गये हुए थे और छे हफ़्तों तक लौटनेवाले नहीं थे। रंगनाथ वैद्य को ले आया। उसने सावित्री की नब्ज की जांच के बाद कहा, ''ज़्यादा परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं है। दवा लेने पर दो तीन दिनों में बीमारी कम हो जायेगी। फिर इसके बाद दो महीनों तक इन्हें पूर्ण विश्राम करना होगा।'' रंगनाथ से यह बताकर और दवा देकर वैद्य चला गया।

तब रंगनाथ ने सूरदास को बुलवाया। उससे कहा, ''तुम्हें घर पर ही रहना होगा। तुम्हारे भोजन की भी यहीं व्यवस्था होगी। रसोई को भी मिलाकर तुम्हें घर का पूरा काम करना होगा।'' सूरदास ने 'हाँ' कह दिया, साथ ही उसने स्पष्ट बता दिया कि वह रसोई बनाना नहीं जानता। रंगनाथ ने उसे यह कहकर आश्वासन दिया कि सावित्री सब कुछ सिखा देगी। अब सूरदास उस घर में काम करने लगा।

सूरदास चुस्त आदमी था। जो भी काम सौंपा जाता, तुरंत कर देता था। रसोई पकाना भी वह जल्दी ही सीख गया। सावित्री ने उसकी चुस्ती की तारीफ़ करते हुए कहा, ''लड़कियाँ भी इतनी जल्दी खाना पकाना सीख नहीं सकतीं। तुम बहुत अक़्लमंद हो। काम करने की तुममें चाह है। जल्दी ही तुम तरक्की कर जाओगे।''

- शिवप्रसाद -

सूरदास की रसोई की भरपूर तारीफ़ रंगनाथ ने भी की। ख़ास करके जब वह कभी बिरियानी बनाता तो पति-पत्नी दोनों उसे बड़े चाव से खाते और कहते कि ऐसी बिरियानी आज तक हमने कभी नहीं खाई। तब वह शरमा कर कहता, "मैंने तो इसे बनाना इसी घर में सीखा।"

यों छे हफ़्ते देखते-देखते गुज़र गये। रंगनाथ का बेटा और बहू काशी से लौट आये। अब उस घर में सूरदास की ज़रूरत नहीं थी। ईसपर चिंतित होते हुए सूरदास ने कहा, "आपके घर में मैं सुखी था। आप जो वेतन देते हैं, वह आपके लिए बड़ी रक़म नहीं है। मुझे अपने घर में ही रहने दीजिए। विश्वासपूर्वक काम करता रहूँगा।"

रंगनाथ ने हँसते हुए कहा, "मेरा बेटा बाहर का काम देखता है। मैं घर पर ही रह जाता हूँ। बहू रसोई का काम संभालती है। बाक़ी काम करने के लिए किसी को तीस रुपये हर महीने के हिसाब से दूँ तो काम चल जायेगा। ऐसे नौकर भी आसानी से मिल जाते हैं। ऐसे स्थिति में हम तुम्हें इतने रुपये क्यों दें? कितना भी संपन्न कोई क्यों न हो, खर्च कम करने पर ही संपत्ति टिकती है। तुम तो मेहनती और अक़्लमंद भी हो। इसी घर के भरोसे रहने की तुम्हें कोई ज़रूरत नहीं।"

फिर भी सूरदास की चिंता दूर नहीं हुई। उसने कहा, "साहब, आप एकमात्र आदमी हैं, जिन्होंने मेरी अक़्ल की तारीफ़ की। अगर आपको लगता हो कि मेरी अक़्लमंदी मेरे भोजन का प्रबंध कर सकती है तो उसका उपाय भी आप ही बताइये।"

"देखो, तुम जैसे बिरियानी बनानेवाले को अब तक मैंने नहीं देखा। हमारे गाँव के बाहर में लगनेवाली हाट में बिरियानी बनाकर बेचोगे तो तुम्हारा भविष्य बदल जायेगा। मूल धन चाहोगे तो मैं तुम्हें कर्ज़ में दे दूँगा।" रंगनाथ ने उसे धीरज बंधाते हुए कहा।

सूरदास पहले तो हिचकिचाता रहा, पर रंगनाथ के बारंबार ज़ोर देने पर उसमें साहस आ गया। इसके दो दिनों के बाद ही उसने बिरियानी बनाना शुरू कर दिया। उसका व्यापार अच्छा चलने लगा और लाभ भी कमाने लग गया। एक

महीने के बाद छोटी-सी भेंट रंगनाथ को देने और कृतज्ञता प्रकट करने वह उनके घर गया।

रंगनाथ ने उससे पूछा कि व्यापार कैसा चल रहा है। उत्तर में सूरदास ने कहा, ''साहब, सब कुछ ठीक है। किसी दिन तो हांडे भर की बिरियानी भी काफ़ी नहीं पड़ती। किसी दिन तो आधे हांडे भर की बिरियानी ही खर्च होती है। ज्यादा बनाने पर ठंडी पड़ जाती है, इसलिए ग्राहक उसे नहीं खरीदते। फिर भी लाभ कमा रहा हूँ।

रंगनाथ ने इसपर खीजते हुए कहा, ''ग्राहकों की सुविधा के उपयुक्त होना चाहिए व्यापार। कुछ लोग थोड़ा ही खाना पसंद करते हैं। अपनी मदद के लिए एक आदमी भी रखो। बिरियानी को हमेशा गरम रखने के लिए सुलगते हुए तीन चूल्हे तैयार रखो। लोगों को जिस तरह की बिरियानी पसंद है, जितनी उन्हें चाहिए, देने की हालत में रहो। अब पूरी थाली दो रुपयों में बेच रहे हो, तो आधी थाली एक रुपये में बेचो। तुम्हारा व्यापार लाभ ही नहीं कमायेगा बल्कि कुछ लोगों को रोज़गार भी दिलवायेगा।''

सूरदास ने ध्यानपूर्वक उसकी बातों को सुनने के बाद कहा, ''साहब, आप बड़े दिमाग़वाले हैं। आपके घर में काम करने का मौक़ा मिला, यह मेरा सौभाग्य है। आपकी सलाह अमल में लाऊँगा। जब कभी भी ऐसी समस्या मेरे सामने खड़ी होगी, तब मैं आपके पास आता रहूँगा। आप सलाह देते रहिये।'' रंगनाथ की तारीफ़ के पुल बांधते हुए उसने कहा।

''बारंबार दूसरों से सलाह लेते रहना अच्छे व्यापारी के लक्षण नहीं हैं। फिर और एक बार मुझसे सलाह माँगोगे तो मैं यही कहूँगा, व्यापार

करना छोड़ दो।'' रंगनाथ ने यों सूरदास को चेतावनी देकर भेज दिया।

अब उसके अधीन तीन लोग काम कर रहे थे। ग्राहकों की इच्छा के मुताबिक वे बिरियानी दे रहे थे। कुछ लोग चाहते थे कि उन्हीं की उपस्थिति में वह फिर से गरम की जाए, तो गरम करके उन्हें दी जाती थी।

अब सूरदास की एक परेशानी और थी। लोग पहले आधी थाली की ही बिरियानी माँगने लगे। वह उन्हें जब स्वादिष्ट लगती तो एक और आधी थाली माँग लेते थे। जहाँ तक सूरदास की बात थी, उसके लिए आधी थाली और पूरी थाली की बिरियानी बनाने में एक ही समय लगता था। इसलिए जहाँ दस पूरी थालियों की बिक्री होनी चाहिए थी, वहाँ दस आधी थालियों की ही बिक्री हो रही थी।

वह सोचने लगा कि इसका परिष्कार क्या हो सकता है? रंगनाथ भी यह जानने को उत्सुक था कि सूरदास का व्यापार कैसा चल रहा है। इधर कुछ महीनों से वह उससे मिलने नहीं गया। इसलिए रंगनाथ ने सोचा, क्यों न मैं खुद वहाँ चला जाऊँ और देखूँ कि उसका व्यापार कैसा चल रहा है। साथ ही बिरियानी का भी स्वाद चख लूँ।

एक दिन जब रंगनाथ हाट में गया तो देखा कि सूरदास की दुकान पर बड़ी भीड़ है। दो आदमी चूल्हों के पास बैठे काम पर लगे हुए हैं। एक आदमी सूरदास को थालियाँ और लोगों को पानी दे रहा है।

रंगनाथ ने देखा कि सूरदास थाली में बिरियानी रख रहा है तो उसे लगा, ''यह पचास पैसों के लिए कुछ-ज्यादा ही दे रहा है। मैं तो इतना खा नहीं सकता। आधी थाली ही मेरे
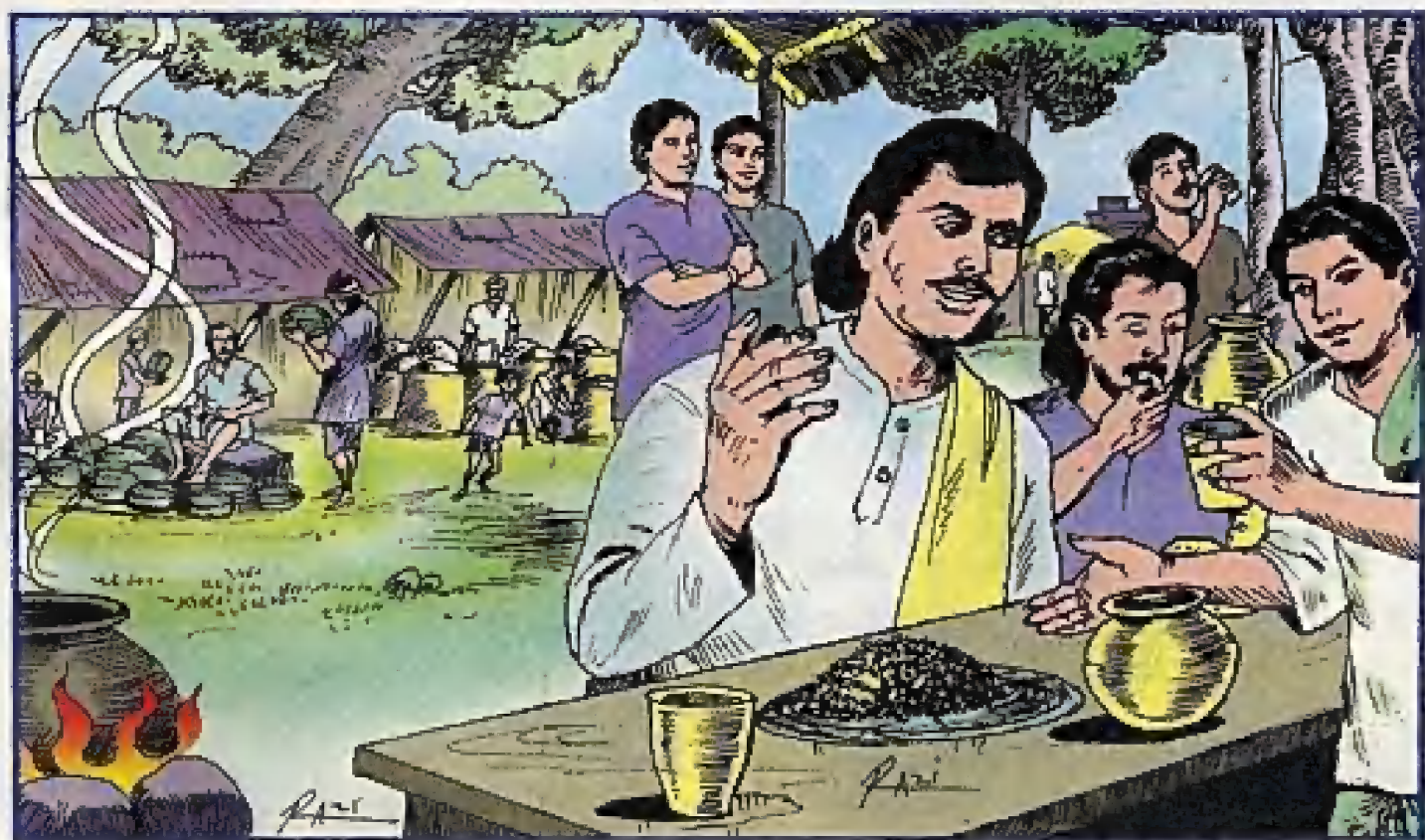
लिए काफ़ी है।'' उसने पानी देनेवाले से कहा कि एक आधी थाली भर की बिरियानी उसे दे। बस, दो मिनटों में बिरियानी उसके हाथ में आ गयी। पर सूरदास ने अब तक रंगनाथ को नहीं देखा था।

रंगनाथ ने देखा कि पूरी थाली भर में बिरियानी है, तो उसे आश्चर्य हुआ। परंतु जिस आदमी ने वह थाली उसे दी, वह तो कह रहा था कि यह आधी है। बिरियानी बढ़िया थी। अनजाने में ही वह सब कुछ खा गया। पच्चीस पैसे जब वह लानेवाले के हाथ में थमा रहा था तब उसने कहा, ''साहब, पचास पैसे दीजिए।''

''मैंने तो आधी थाली ही माँगी थी।'' रंगनाथ ने ज़ोर देकर कहा। तब सूरदास ने रंगनाथ का कंठस्वर पहचान लिया और उसने तुरंत रंगनाथ को प्रणाम किया। फिर उस आदमी से कहने लगा, ''अरे सुनो, साहब से पैसे मत लेना।''

जब भीड़ कम हो गयी, तब रंगनाथ ने सूरदास से कहा, ''अधिक लाभ की आशा करना गलत नहीं है। पर लोगों को धोखा देना नहीं चाहिए। तुम्हारे आदमी ने आधी थाली भर की बिरियानी दी और पूरी थाली का दाम माँग रहा है।''

सूरदास ने इसपर हँसते हुए कहा, ''साहब, करूँ भी क्या? सब लोग पूरी थाली के बदले दो-दो आधी-आधी थालियों की बिरियानी खा रहे हैं। इससे मेरा काम भी बढ़ गया। आधी थाली देने से इन्कार कर दूँ तो बिना खाये चले जा रहे हैं। इसीलिए पूरी थाली को ही आधी थाली कहते हुए पचास पैसों में ही बेच रहा हूँ। मैंने मात्रा में कोई कमी नहीं की। दाम भी नहीं बढ़ाया। पूरी थाली को नाम दिया है, आधी थाली। आप ही कहिये, इसमें धोखा क्या है?''

''बिल्कुल नहीं,'' कहते हुए रंगनाथ ने सूरदास की पीठ थपथपाई और कहा, ''अब आगे से तुम सूरदास के नाम से पुकारे नहीं जाओगे बल्कि बिरियानी सूरदास के नाम से पुकारे जाओगे। तुम्हारी ख्याति भी होगी। बहुत खुशी हुई तुम्हें और तुम्हारे व्यापार को देखते हुए।'' यों कहकर वह वहाँ से चला गया।

समाचार झलक

नोटों की मालाएँ

चेन्नई के एक गणेश मंदिर में नये वर्ष दिवस पर गणेश जी की प्रतिमा को रु.५०, रु.१००, रु.५०० और रु.१००० के नोटों की मालाओं से सजाया गया। नोटों का कुल मूल्य ६ लाख ५० हजार रु. था।

इन ताजे नोटों का दान उस मंदिर में नित्य प्रतिदिन आनेवाले भक्तों द्वारा किया गया था। चेन्नई के सीमान्त पर एक अन्य मंदिर में भद्रकाली (दुर्गा) की प्रतिमा को ५ लाख ५० हजार एक सौ रु. के नोटों से तथा कुल २ लाख रु. के मूल्य के ५०० रु. के नोटों से सजाया गया।

नाम के लिए दाम

एक ३४ वर्षीय कनाडा निवासी ब्रेण्ट मोफट विश्व रेकार्ड बनाना चाहता था। उसने लीक से कुछ हटकर कर दिखाया। उसने अपने सारे शरीर में ७०२ पिन और सूइयाँ चुभोईं - अधिकांश अपने पैरों में, जिसमें उसे ८ घण्टे लगे। उसका लक्ष्य था एक हजार चुभन, लेकिन ७०२ तक पहुँचते-पहुँचते उसकी पीड़ा असह्य हो गई। उसे पिन को अपने स्थान पर ५ मिनट तक रखने की जरूरत थी। उसके बाद उन्हें निकालना अधिक कष्टदायक था जैसा कि मोफट ने बताया। मनितोबा का निवासी मोफट इस पूरी प्रक्रिया के दरम्यान हेडफोन की सहायता से संगीत सुनता रहा। कुछ पीड़ा तो संगीत ने हर ली होगी ! तुम क्या कहते हो?

हरयाणा की एक लोक कथा

हरयाणा राज्य भारतीय संस्कृति और सभ्यता का पालना रहा है। यह क्षेत्र जनश्रुत भरत वंश की जन्म भूमि है। कहा जाता है कि ब्रह्मा ने यहाँ तपस्या की थी और उसके बाद ही ब्रह्माण्ड की रचना की। वेद व्यास ने भी इसी पुण्य भूमि पर महाभारत महाकाव्य का सृजन किया। फिर इसी स्थान पर कुरुक्षेत्र में भगवान कृष्ण और अर्जुन का सम्वाद हुआ जिसे भागवत गीता कहा जाता है।

एक स्वतंत्र राज्य के रूप में इसका गठन १ नवम्बर १९६६ को किया गया। इसका क्षेत्रफल ४४ हजार वर्ग किलोमीटर है और इसकी जनसंख्या २ करोड़ १० लाख ८२ हजार ९८९ है।

हरयाणा के पूरब में उत्तर प्रदेश और दिल्ली, पश्चिम में पंजाब, उत्तर में हिमाचल प्रदेश और दक्षिण में राजस्थान है। शिवालिक और अरावली की पहाड़ियाँ राज्य की भौगोलिक विशिष्टताएँ हैं। यमुना और घग्गर यहाँ की मुख्य नदियाँ हैं। विश्वास किया जाता है कि कल्पित सरस्वती नदी हरयाणा से होकर बहती थी।

राज्य की राजधानी चण्डीगढ़ है और हिन्दी यहाँ की मुख्य भाषा है। पंजाबी, उर्दू तथा हरयाण्वी जैसी कुछ स्थानीय बोलियाँ भी बोली जाती हैं।

दुर्भाग्य को दूर भगाना

हरयाणा के उपजाऊ प्रदेश में किसानों का एक फलता-फूलता परिवार रहता था। वृद्ध चतुर किसान के सात बेटे थे। छः बेटों का विवाह हो चुका था, जबकि सातवाँ अभी छोटा छोकरा था। सब के सब कठिन परिश्रम करते थे, मेहनत का फल बाँटकर खाते थे और सुख से रहते थे। उनके खेत गाँव के चारों ओर फैले हुए थे और लगभग सालों भर सुनहले गेहूँ के पौधे लहराते रहते थे।

जिन्दगी आराम से कट रही थी कि एक दिन अचानक जब वृद्ध किसान सवेरे-सवेरे उठा तो आँखें खोलने पर भी उसे कुछ दिखाई न पड़ा।

वह दोनों आँखों से अंधा हो गया था। वह डर गया और उसके परिवार वाले भी घबरा गये। चिकित्सा के लिए तुरंत वैद्य, हकीम और ओझा को बुलाया गया, लेकिन किसी को पता न चला कि क्या हुआ।

तब एक दिन गाँव में एक फकीर आया। किसान का बेटा उससे बाजार में मिला और उसे घर पर पिता के पास बुलाकर ले आया। फकीर ने बूढ़े किसान को देखा और कहा, "आह! यह किसी दुष्टात्मा का काम है। आँख की रोशनी वापस लाने का एकमात्र उपाय है इनकी आँखों से बड़ी सुनहली मछली की आँखों का स्पर्श जो बंगाल के पार समुद्र में रहती है।"

लेकिन जब किसान ने सहायता के लिए बड़े बेटे की ओर निहारा तो वह पीछे हट गया और बोला, "मैं पारिवारिक हूँ। मुझे पत्नी और दो बच्चों की देखभाल करनी है। मैं इतनी खतरनाक यात्रा पर कैसे जा सकता हूँ! कौन जानता है कि मार्ग में कुछ अनिष्ट नहीं घटेगा?"

किसान तब सहायता के लिए अन्य बेटों की ओर ताकने लगा। दूसरे, तीसरे, चौथे, पाँचवें और छठे बेटों ने भी पहले की तरह ही बहाना बना दिया। निराश होकर बूढ़ा किसान सबसे छोटे बेटे की ओर मुड़ा। उसका विवाह नहीं हुआ था और वह अपने वृद्ध पिता को बहुत चाहता था। इसलिए वह सुनहली मछली की खोज में तुरंत निकल पड़ा।

वह तेजी से और दृढ़ संकल्प के साथ आगे

बढ़ा और कितने ही जंगलों और राज्यों को पार करता हुआ बंग भूमि के उस पार समुद्र तट पर पहुँचा। उसने किसी से एक नाव उधार ली और सुनहली मछली को खोजना शुरू किया। उसने जाल बिछाया और प्रतीक्षा की। बहुत प्रतीक्षा के बाद एक दिन उसका भाग्य चमका।

सुनहली मछली उसके जाल में आ गई। जब उसने मछली को बाहर निकाला तो आँखों में आँसू भरकर वह बोली, "मुझे न पकड़ो। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

तब लड़के ने समझाया, "एक फकीर ने कहा है कि केवल तुम्हारी आँखों का स्पर्श मेरे पिता का अन्धापन दूर कर सकता है। इसलिए तुम्हें पकड़कर घर ले जाने के सिवा मेरे पास कोई अन्य विकल्प नहीं है।"

तब सुनहली मछली ने कहा, "बस ! सिर्फ़ यही बात है ! मैं जानती हूँ कि तुम्हारे पिता का अन्धापन मेरी आँखों के बिना ठीक हो सकता है। किनारे से कुछ रेत ले आओ और उसे मेरी आँखों से स्पर्श होने दो। उस रेत को अपने पिता के पास ले जाओ और उनकी आँखों से उसका स्पर्श कराओ। उनकी नेत्र ज्योति वापस आ जायेगी।"

"ठीक है, जैसा तुम कहती हो, वैसा ही करूँगा। लेकिन यदि मेरे पिता ठीक नहीं हुए तो मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा। यह धमकी नहीं है। केवल एक सलाह है कि तुम्हें अपने वचन का पालन करना चाहिए।"

मछली ने उसे धन्यवाद दिया, "मैं तुम्हारे पिता के स्वास्थ्य-लाभ के लिए प्रार्थना करूँगी। जब भी तुम मुझे याद करोगे, मैं तुम्हारी सहायता के लिए आ जाऊँगी।"

तब किसान के बेटे ने समुद्र तट से रेत लेकर उसे सुनहली मछली की आँखों से स्पर्श किया और फिर शीघ्र ही पिता के पास लौट गया। जैसे ही उसने रेत को पिता की आँखों से स्पर्श होने दिया, उसकी नेत्र-ज्योति वापस आ गई। वह अपने छोटे बहादुर बेटे की मुस्कान देख सकता था। वह अति प्रसन्न था।

खबर मिलते ही किसान के अन्य छः बेटे उसे देखने आये। उन्हें अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। "हमारा भाई कैसे सफल होकर लौट सकता है? यह इतना मुश्किल काम था !" भाइयों ने आपस में पूछा।

लोक नृत्य

हरयाणा के लोकनृत्य उत्साह, ओज और क्रियाशीलता से भरपूर होते हैं। हर अवसर के लिए नृत्य हैं। इनमें सर्वाधिक लोकप्रिय है - धमाल या दाफ। इसका प्रदर्शन प्रायः उस समय किया जाता है जब होली से पहले फसलें तैयार हो जाती हैं। इसे सामान्य तौर पर कुर्ता, धोती और रंगीन पगड़ी की परम्परागत वेशभूषा में पुरुष खुले मैदान में करते हैं। ढोल या धमाल की चोट पर यह नृत्य किया जाता है। झूमर एक अन्य लोकप्रिय नृत्य है। इसे ढोलक की ताल पर केवल स्त्रियाँ करती हैं। इसका नाम झूमर नाम के गहने पर पड़ा है जिसे विवाहित स्त्रियाँ अपने ललाट पर पहनती हैं।

कुछ अन्य लोक नृत्य हैं - लूर, रासलीला, गुग्गा, छटी तथा फाग।

वे अपने छोटे भाई से जलने लगे। उन्हें यह परेशानी सता रही थी कि वह अपने पिता की अपार सम्पत्ति का कहीं अकेला वारिस न बन जाये। उन्होंने इसके विरुद्ध षड्यंत्र किया।

सबसे बड़े भाई ने कहा, "हमें ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए। तुमने पिता की नेत्र-ज्योति वापस लाने में किसी तरह सफलता प्राप्त कर ली। लेकिन पिता, मछली की वे आँखें कहाँ हैं जिनकी आपको जरूरत थी? उसने आपकी आँखों को केवल रेत से स्पर्श किया। यह संयोग मात्र भी हो सकता है कि आपकी आँखें ठीक हो गईं।"

"कौन जानता है कि यह रेत बाद में आँखों को हानि नहीं पहुँचायेगी!" दूसरे भाई ने थोड़ा गरम होते हुए कहा।

"उसे मछली की आँखें लेकर आना चाहिए था। उसने सबको धोखा दिया।" तीसरे ने कहा।

उनकी चालाकी भरी बातों का आखिर असर पड़ ही गया। सबसे छोटे बेटे को घर छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया गया। उस पर आरोप लगाया गया कि उसने पिता को धोखा दिया है। उसने घर छोड़ दिया। वह बिना गन्तव्य के इधर-उधर घूमने लगा। एक दिन जब वह एक जंगल से गुजर रहा था तो उसने एक गीदड़ की चीत्कार सुनी।

'दयालु महानुभाव ! कृपया मेरी रक्षा कीजिए। शिकारी मेरा पीछा कर रहे हैं। जब भी आपको मेरी आवश्यकता होगी, मैं आपकी सहायता करूँगा।" गीदड़ ने हाँफते हुए कहा।

लड़के को गीदड़ पर दया आ गई। "वहाँ गड्ढे में छिप जाओ। मैं सूखे पत्तों से तुम्हें ढक दूँगा। जब शिकारी चले जायेंगे तब मैं तुम्हें बुला लूँगा।" लड़के ने कहा।

गीदड़ को यह विचार पसन्द आया। वह गड्ढे में लेट गया। शिकारी गीदड़ को खोजते हुए उधर आये और किसान के लड़के को देखा। "क्या इधर किसी गीदड़ को देखा है?" उन्होंने लड़के से पूछा।

"गीदड़? गीदड़ क्या होता है? मैंने कभी गीदड़ नहीं देखा।" लड़के ने भोली सूरत बनाकर कहा।

शिकारी का धीरज टूट गया। "यह मूर्ख गीदड़ भी नहीं जानता। हम लोग समय नष्ट न करें और आगे चलकर देखें कि गीदड़ किधर गया है।" एक शिकारी ने कहा।
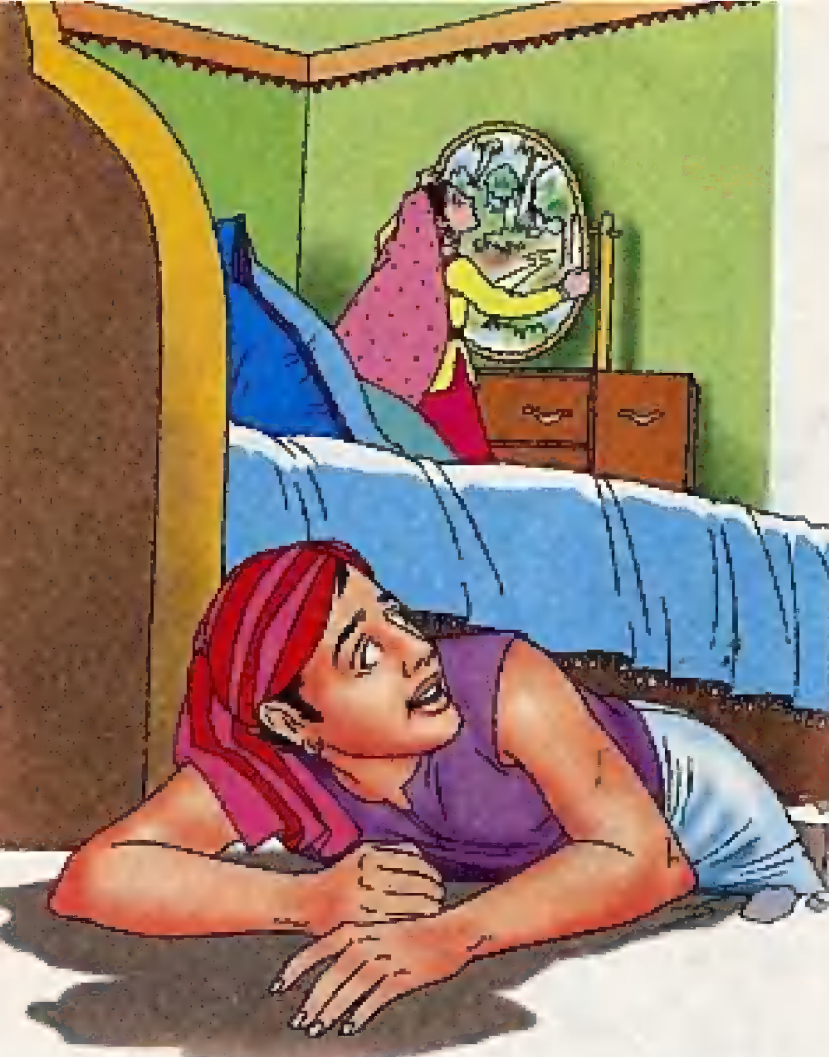
शिकारियों के चले जाने के बाद लड़के ने गीदड़ को गड्ढे से बाहर आने के लिए कहा। "जब भी तुम मुश्किल में पड़ जाओ तो मेरी याद करना। मैं फौरन तुम्हारी सहायता के लिए आ जाऊँगा।" गीदड़ ने लड़के को धन्यवाद देते हुए कहा।

"घबराओ नहीं, मैं मुश्किल में नहीं हूँ। यहाँ से जल्दी जाओ, नहीं तो शिकारी फिर वापस आ जायेंगे।" लड़के ने मुस्कुराते हुए कहा और वह स्वयं घने जंगल की ओर चला गया।

जंगल के अन्त में एक राज्य था। वहाँ की राजकुमारी के पास जादू का एक दर्पण था। वह दर्पण में सब कुछ की परछाईं देख सकती थी। उसने घोषणा कर दी थी कि जो भी कहीं छिपकर अपनी परछाईं को दर्पण पर पड़ने नहीं देगा, राजकुमारी उससे विवाह कर लेगी। और यदि उसकी परछाईं दर्पण पर पड़ गई तो उसका सिर काट लिया जायेगा। लड़के ने महल के चारों ओर बहुत लोगों की हड्डियाँ और खोपड़ियाँ देखीं। वह स्थान सिर कटते हुए युवकों की दर्दनाक चीखों से भर गया था। लेकिन फिर भी वह भयभीत नहीं था। वह राजकुमारी से जाकर मिला।

राजकुमारी ने पूछा, "क्या तुम्हें मालूम है कि शर्त क्या है?" "निश्चित रूप से, मैं किसी भी परिणाम के लिए तैयार हूँ।" लड़के ने कहा।

"ठीक है, आज रात को अपने को छिपा कर रखो। यदि मैं कल सुबह तक तुम्हारा पता लगा लूँ तो तुम्हारा सिर...।" राजकुमारी ने वाक्य अधूरा छोड़ दिया जिसका अन्तरार्थ था कि वह सुबह तक नहीं बचेगा।

रात में लड़का समुद्र तट पर गया और सुनहली मछली को बुलाकर अपनी समस्या बतायी।

"ओह! यह मामूली बात है। मैं तुम्हें अपने पेट में छिपा लूँगी और समुद्र की गहराई में चली जाऊँगी।" मछली ने कहा।

तब तक राजकुमारी ने दर्पण को चारों दिशाओं में घुमाया। कुछ देर में लड़के की परछाईं दर्पण पर आ गयी। सुबह में जब लड़का आया तब राजकुमारी ने उसे ठीक वही स्थान बता दिया जहाँ वह छिपा हुआ था। "लेकिन," फिर उसने कहा, "तुम काफी दिलचस्प व्यक्ति लगते हो। मैं तुम्हें बचने का एक अवसर और दूँगी।"

दर्शनीय स्थल

उत्तर भारत का प्रवेश द्वार हरयाणा एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल भी है। आर्य सभ्यता का प्राचीन केन्द्र कुरुक्षेत्र हरयाणा में पर्यटकों के लिए सबसे बड़ा आकर्षण-केन्द्र है।

ब्रह्म सरोवर पवित्रतम स्थल माना जाता है। सूर्यग्रहण के समय तीर्थ यात्रियों की यहाँ अपार भीड़ होती है। ऐसी धारणा है कि इस सरोवर में डुबकी लगाने से एक हजार अश्वमेध यज्ञ करने का फ़ल मिलता है। सरोवर के चारों ओर अनेक मंदिर हैं। यहीं पर महाभारत युद्ध हुआ था।

इस बार वह लड़का जंगल में गया और गीदड़ से मिला। ''घबराओ नहीं, मैं यथाशक्ति तुम्हारी सहायता करूँगा।'' गीदड़ ने आश्वासन दिया।

गीदड़ ने अपने दोस्तों की एक सभा बुलाई। उन सब ने जंगल से लेकर महल में राजकुमारी के पलंग तक एक सुरंग खोदने का निश्चय किया ताके पलंग के नीचे लड़के को छिपाया जा सके। योजना को कार्यान्वित किया गया और लड़का पलंग के नीचे छिप गया।

राजकुमारी ने दर्पण को अपने पलंग के नीचे छोड़कर चारों दिशाओं में घुमाया। उसे आश्चर्य हुआ कि लड़के की परछाईं दर्पण में क्यों नहीं आई। वह प्रयास करती रही लेकिन सब व्यर्थ !

वह जानती थी कि उसे अपने वचन का पालन करना होगा और उसके साथ विवाह करना होगा। वह उसे देखने के लिए झरोखे पर गई। उसे अधिक देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा। वह दौड़कर उसे बधाई देने गई। ''युवक ! मैं खेल हार गई। तुम जीत गये।''

विवाह के उपरान्त लड़का राजकुमारी के साथ अपने गाँव के लिए चल पड़ा। बूढ़े किसान की नेत्र-ज्योति अभी तक ठीक थी। उसके सभी भाइयों ने अपने आचरण पर पश्चाताप किया और राजघराने की दुल्हिन के साथ अपने छोटे भाई का हार्दिक स्वागत किया, ''मेहरबानी करके हमें माफ कर दो भाई ! हम अपने व्यवहार के लिए बहुत शर्मिन्दा हैं।''

किसान का परिवार फिर एक हो गया। छोटा लड़का तब राजकुमारी और अपने पिता के साथ अपने राज्य में लौट गया। भाई अपने भाग्य के भरोसे गाँव में रह गये।

होनेवाला दामाद

भानुमति बड़ी ही जल्दबाज़ औरत थी। छोटी-छोटी बात पर भी वह परेशान हो उठती थी। परंतु उसके पति कमलनाथ का स्वभाव उसके बिलकुल विरुद्ध था। किसी भी विषय को लेकर वह बखूबी सोचता था और तब निर्णय लेता था। बोलता भी बहुत कम था। अगर बोलता भी तो तोल-तोलकर। किसी भी गंभीर समस्या पर वह सही निर्णय लेने की शक्ति रखता था। उनकी एक बालिग़ बेटी थी।

भानुमति उसकी शादी के विषय में बड़ी ही बेचैन रहती थी। उसने एक दिन अपने पति से कहा, "बिटिया की शादी जल्दी ही कहीं पक्की कर दीजिए। मालूम है, वह अब बीस साल की जवान लड़की है।"

कमलनाथ ने निश्चिंत होकर कहा, "मैं चुप हूँ, इसका यह मतलब नहीं कि मैं इस बारे में कुछ सोचता ही नहीं हूँ। जो भी करना है, सही वक़्त पर करूँगा। जल्दबाज़ी करने से बात के बिगड़ने की भी संभावना है।

यों भानुमति का कहना और कमलनाथ का यों जवाब देना रोज़मर्रे की बात हो गयी।

भानुमति एक दिन अपने रिश्तेदारों के घर गयी और वहाँ से लौटते ही पति से कहने लगी, "आपने यह बात सुनी? हमारे गाँव के शिवालय के पास की सराय में एक स्वामीजी ठहरे हुए हैं। हमारी इच्छा के जवाब में वे "तथास्तु" कहें तो वह इच्छा अवश्य पूरी होती है। पूरा गाँव यही कहता है। उनका यह भी कहना है कि एक से ज्यादा वरदान माँगना नहीं चाहिए।"

"तुम्हारे ही मुँह से अभी-अभी उस स्वामीजी की बात सुन रहा हूँ। लगता है, स्वामीजी ज्ञानी हैं, उन्हें दुनिया की अच्छी परख है," कमलनाथ ने हँसते हुए कहा।

- रघुवंशी -

भानुमति उस दिन शामको स्वामीजी से मिलने गयी। स्वामीजी ने उसे देखते ही पूछा, "क्या माँगने आयी हो पुत्री?"

भानुमति घबरा गयी। वह निर्णय नहीं कर पायी कि क्या वर माँगना चाहिए। थोड़ी देर तक सोचने के बाद उसने कहा, "जब मैं पहले पहल ससुराल आयी और घर बसाया, तब मुझे पैसे की तंगी के कारण बहुत से कष्ट झेलने पड़े। मेरी बेटी का पति करोड़पति हो।"

स्वामीजी ने मुस्कुराते हुए पूछा, "क्या करोड़पति होना पर्याप्त है? समझो, वह संतानहीन हो जाए तो क्या उसकी सारी संपत्ति किसी और की नहीं हो जायेगी?"

भानुमति को स्वामीजी का कहा सच लगा। उसने कहा, "तो ऐसा दामाद देने का अनुग्रह कीजिए, जिसकी संतान हो।"

"संतान होने मात्र से क्या सब कुछ ठीक हो जायेगा? अगर तुम्हारी पुत्री की देखभाल वह ठीक तरह से नहीं करेगा तो क्या उसका जीवन बरबाद नहीं हो जायेगा?" स्वामीजी ने पूछा।

भानुमति सोचती ही रही और आखिर बोली, "उसे ऐसा पति दीजिए, जो उससे प्रेम करे।"

"परंतु तुम्हारी बेटी अगर उसे नहीं चाहती हो तो वह कैसे सुखी रह सकती है?" स्वामीजी ने कहा।

सोचते-सोचते भानुमति किसी निर्णय पर नहीं आ सकी। बौखलाकर उसने कह दिया, "मेरी बेटी का पति सुंदर हो।"

"बाहरी सुंदर होना क्या काफ़ी है? समझो, उसकी आयु अल्प है, तो सुंदर होने मात्र से क्या लाभ?"

"स्वामीजी, मेरी समझ में नहीं आता कि क्या माँगू? कल मैं अपने पति को भेजूँगी।"

पत्नी के बार-बार कहने पर, कमलनाथ स्वामीजी से मिलने आया। स्वामीजी ने पूछा, "पुत्र, तुम्हें क्या वर चाहिए?"

"हमारी बेटी के लिए सब प्रकार से योग्य पति का वर दीजिए स्वामीजी।" कमलनाथ ने अपनी इच्छा प्रकट की। "तथास्तु," कहते हुए स्वामीजी मुस्कुरा पड़े।

अपने भारत को जानो

१. भारत की प्रथम बिजली ट्रेन को, जो कल्याण और पुणे के मध्य चली, निम्नलिखित नाम से जाना जाता है :

a) कल्याण रानी
b) पुणे एक्सप्रेस
c) दक्कन क्विन
d) विन्ध्य रानी

२. व्हिस्परिंग गैलरी देखने के लिए तुम कहाँ जाओगे?

a) गोल गुम्बज (बीजापुर)
b) हवामहल (जयपुर)
c) अजन्ता केव्स (औरंगाबाद)
d) ताजमहल (आगरा)

३. फिल्म सिटी कहाँ पर बसा है?

a) नई दिल्ली b) कानपुर
c) हैदराबाद d) गुवाहाटी

४. इस व्यक्तित्व को पहचानो। एक भारतीय के साथ मिलकर उसने एक अनोखी उपलब्धि हासिल की, जिसका अनुकरण उसके बेटे ने हाल में ही किया।

५. इस चित्र में कुछ बेतुका है। वह क्या है?

६. भारतीय रेल ने इस वर्ष १५० वर्ष पूरे कर लिये हैं। इस अवसर के उत्सव के लिए मस्कट को क्या नाम दिया गया है?

a) अप्पू b) भोलू
c) छोटू d) भालू

(उत्तर अगले महीने)

मई प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. शिमला
२. गोदावरी
३. दिल्ली में इण्डिया गेट के सामने जल नहीं है। समुद्र और आधुनिक भवन मुम्बई के गेट वे ऑफ इण्डिया पर के परिचित दृश्य के अंश हैं।
४. गंगा पर बना हावड़ा ब्रिज
५. शिमला
६. जमशेदपुर
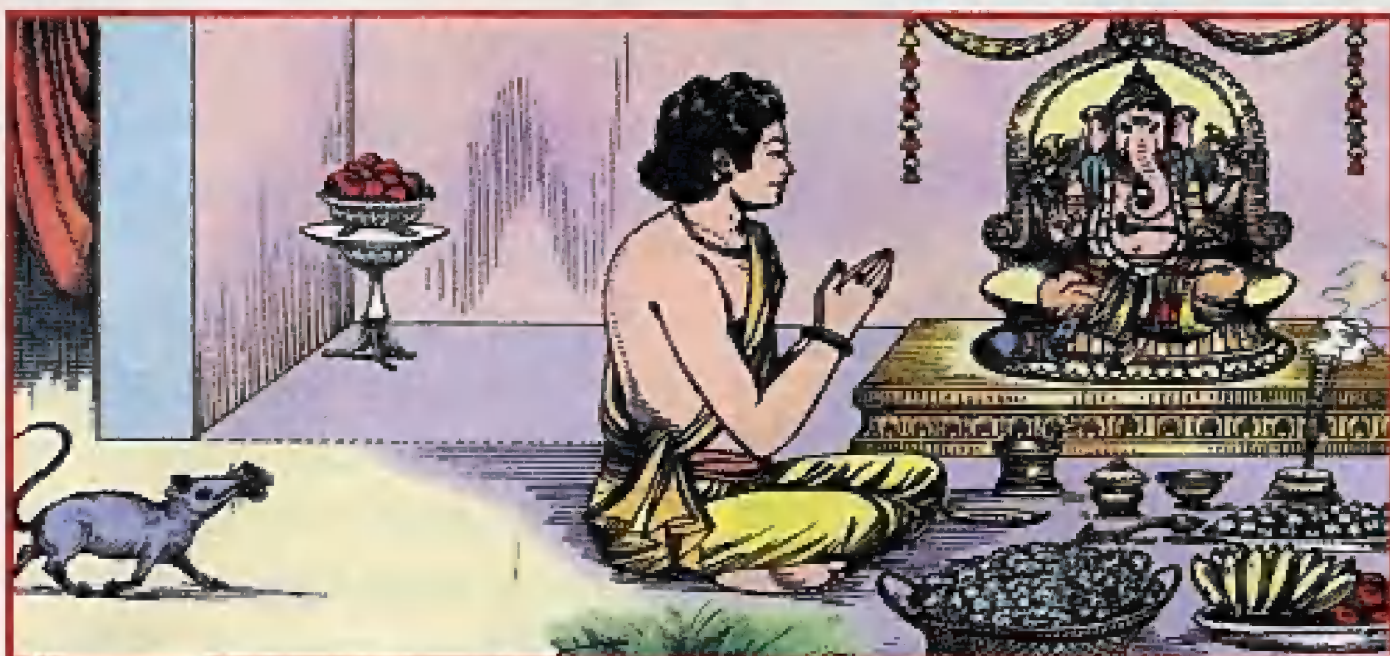
विघ्नेश्वर

राजा शत्रुंजय चुहिया के साथ चलुक वर्मा को अपने महल से भगाते हुएए बोला, ''तुम हमारे बीच रहने योग्य नहीं हो। तुम्हारे मूषिक वाहनधारी विघ्नेश्वर की भक्ति के अनुरूप उसी जाति की गृहिणी तुम्हारे योग्य है। दिन भर किसी को न दिखाई देने लायक तुम्हारी पत्नी के लिए तुम्हारे छोटे मकान में चूहों के कई बिल हैं।''

अपने पिता की बातें सुनकर चलुक वर्मा बड़ी शांति के साथ बोला, ''पिताजी, एक पिता के रूप में अपने सभी पुत्रों का बिवाह करना बहुत अच्छी बात है। कहा जाता है कि पति-पत्नी का संबंध पहले ही निश्चित हुआ होता है। इसमें हमारा वश कुछ नहीं चलता। यह सब विघ्नेश्वर के संकल्प का फल है!'' चलुक जब उत्तम ग्रंथों का अध्ययन करते होते तब उसकी पत्नी चलुका पास में बैठकर बड़े ध्यान के साथ सुना करती थी। चलुक जब विघ्नेश्वर की पूजा में लगा रहता, तब चलुका अपने मुँह से फूल ला देती थी। चलुक के भोजन करने के बाद जो कुछ चलुका को मिल जाता, वही खाती। यों समय बीतता गया। विनायक-चतुर्थी निकट आ गई।

सब लोग घर लीप-पोत कर धान कूट रहे थे। चलुका ने एक रात को सभी चूहों को बुलवा भेजा। चूहों ने चूने में अपनी पूँछें डुबोकर दीवारों पर चूना पोत दिया। अपने दाँतों से धान के छिलके निकाल कर चावल बनाया।

विनायक चतुर्थी के दिन सबेरे चलुक वर्मा की सभी भाभियाँ सोने के कलशों में पानी भरकर अपने सर पर उठाये नदी से चली आ रही थीं; इसे देख चलुक थोड़ा दुखी हुआ।

इस पर चलुका तुरंत एक कलश में घुस गई। उसे लुढकाते नदी के किनारे पहुँची। मगर कलश से बाहर निकलने पर उसे लगा कि वह बड़ा भारी कलश है। तब वह हताश हो सोचने लगी, ''मैं कलश को लुढ़का कर तो यहाँ तक ले आई, लेकिन इसे पानी में कैसे डुबो सकती हूँ? मैं मूर्खा हूँ, नालायक हूँ। मेरे ज़िंदा रहने से फ़ायदा ही क्या है?'' यों विचार कर वह एक चट्टान पर अपना सर फोड़ने को तैयार हो गई। उस वक़्त विघ्नेश्वर ने प्रत्यक्ष होकर चलुका की पीठ पर प्यार से निहारा। इस पर चलुका का पाप विमोचन हुआ और वह एक देव कन्या कल्याण किंकिणी के नाम से अपने निज रूप में आ गई। उसने विघ्नेश्वर के चरणों पर गिर कर उनकी स्तुति की। तब विघ्नेश्वर कल्याण किंकिणी को आशीर्वाद देकर अंतर्धान हो गये।

इसके बाद कल्याण किंकिणी पानी से भरे कलश को अपने सर पर लेकर घर की ओर चल पड़ी। उस दृश्य को देख लोग विस्मय के साथ मन ही मन कहने लगे, ''यह दिव्य सुंदरी कौन है? यह किसके घर जा रही है?''

चलुक वर्मा की भाभियाँ कल्याण किंकिणी को अपने देवर के घर में क़दम रखते देख लज्जा के मारे नतमस्तक हो गईं।

राजा शत्रुंजय अपनी मूर्खता पर शर्मिंदा हुआ, तब चलुक वर्मा को उसकी पत्नी के साथ राज महल में लिवा ले गया।

चलुक वर्मा के बड़े भाइयों ने अपने पिता से कहा, ''पिताजी, आपने हमारे विवाह भी इस प्रकार की चुहियों के साथ क्यों नहीं किये? ऐसा करते तो हमें भी अप्सराएँ मिल जातीं!''

शत्रुंजय यह सोचकर दुखी हुआ कि क्या ऐसे मूर्ख पुत्रों के वास्ते ही मैंने यह सारा साम्राज्य कमा रखा है? फिर वह विरक्त हो तपस्या करने के लिए जंगल में चला गया।

इसके बाद चलुक वर्मा के भाई आपस में लड़ते हुए ख़त्म हो गये। चलुक वर्मा के विरोध करने के बावजूद जनता ने उसे अपना राजा घोषित किया। चलुक वर्मा के शासन में जनता ने सुख और शांति के साथ अपने दिन बिताये।

चलुक वर्मा ने कल्याण किंकिणी के नाम पर एक और महानगर का निर्माण करवाया। कल्याण किंकिणी के द्वारा उसके चार पुत्र हुए। कालांतर में वे चालुक्य कहलाये। इस तरह चालुक्य वंशों

के मूल पुरुष बने चलुक वर्मा के राज्य काल में वातापि नगर अनेक मंदिरों से सुशोभित हुआ। कला और पांडित्य का केंद्र बना। उस नगर के अधिदेवता के रूप में विघ्नेश्वर की आराधना हुई। उत्कृष्ट शिल्प से पूर्ण मंदिर के मण्डप को देखने राजाओं से लेकर साधारण लोग सदा आया करते थे। चालुक्यों ने चारों तरफ़ अपने राज्य स्थापित कर शासन किया। चालुक्य वंशी राजा कई शाखाओं में बंटकर सारे देश में फैल गये। वे लोग बाद में वातापि पर शासन करने के कारण वातापि चालुक्य कहलाये। इसी तरह कल्याणी पर राज्य करनेवाले कल्याणी चालुक्य, वेंगी पर राज्य करनेवाले वेंगी चालुक्य कहलाये। कालांतर में वातापि नगर बादामी के नाम से लोकप्रिय हुआ।

विघ्नेश्वर की मनोरंजक गाथाएँ

वातापि गणपति के रूप में विघ्नेश्वर तथा विघ्नेश्वर पुण्य क्षेत्र के रूप में वातापि नगर जब सारे देश में प्रसिद्ध हो चुके थे, उन दिनों पावन मिश्र नामक एक पंडित शाम के समय गणपति के मंदिर के मण्डप में बच्चों को विघ्नेश्वर संबंधी कहानियाँ सुनाया करते थे।

मंदिर के मण्डप की दीवारों पर विघ्नेश्वर की गाथाएँ चित्रित थीं। उन चित्रों में से एक मनोरंजक चित्र की ओर एक बालक ने गुरुजी को दिखाकर उसकी कहानी सुनाने के लिए कहा।

पावन मिश्र ने कहानी सुनाना शुरू किया - एक नगर में सत्य शर्मा और लोभ गुप्त नामक दो

गृहस्थ अड़ोस-पड़ोस में रहते थे। लोभ गुप्त का असली नाम लाभ गुप्त था। लेकिन लोभी होने के कारण वह लोभ गुप्त कहलाने लगा।

सत्यशर्मा और लोभ गुप्त रोज शिवाले में आया करते थे। सत्य शर्मा मंदिर के गर्भगृह में जाने के पहले विघ्नेश्वर की मूर्ति को प्रणाम करके शिवजी के दर्शन करने चला जाता था। लेकिन लोभ गुप्त गर्भगृह में प्रवेश करते ही शिवलिंग के सामने साष्टांग दण्डवत करता और देर तक लाभ पहुँचाने की प्रार्थना करता था।

एक दिन सत्य शर्मा शिवजी के दर्शन करके लौट रहा था, उसी वक़्त लोभ गुप्त मंदिर में पूजा करने आ रहा था। तब नंदीश्वर विघ्नेश्वर से पूछ रहा था, ''विघ्नेश्वर, आपका भक्त सत्य शर्मा इस वक़्त बड़ी तंगी में है। क्या आप उसकी मदद नहीं करेंगे?''
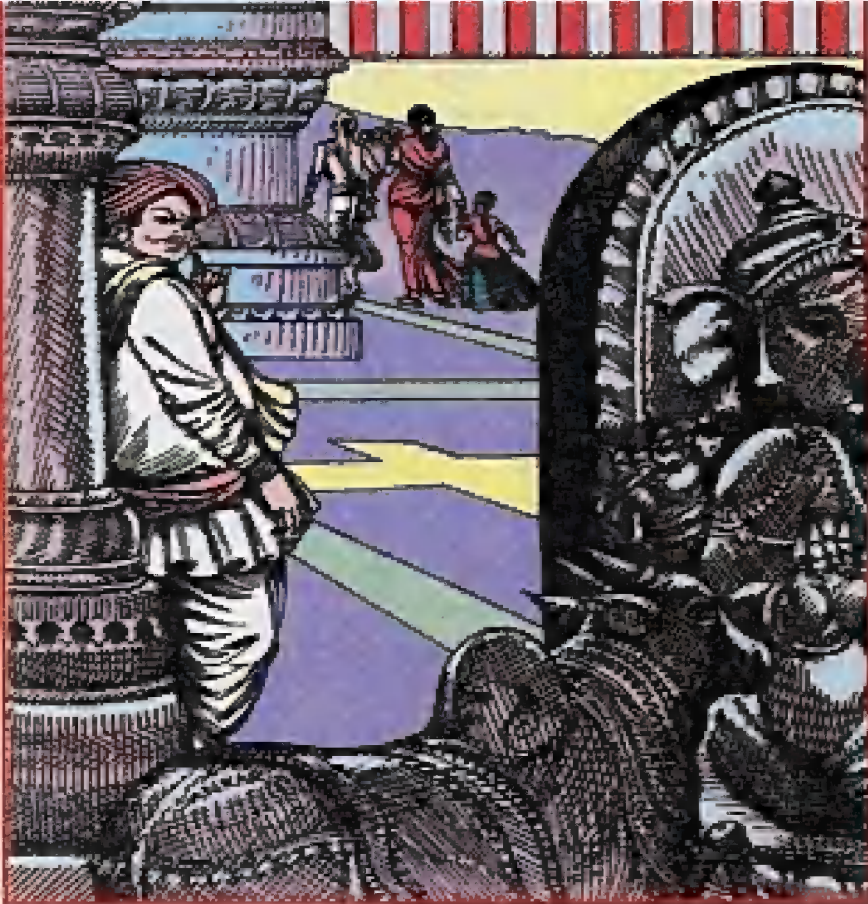
"हाँ, हाँ नंदी, तुम्हारा कहना सही है। आज शाम तक मैं उसे एक हज़ार रुपये पहुँचाने जा रहा हूँ।" विघ्नेश्वर ने जवाब दिया।

पत्थर की मूर्तियों को बातचीत करते देख लोभगुप्त अचरज में आ गया और पल भर भी देरी किये बिना वह सीधे सत्य शर्मा के घर पहुँचकर बोला-"सत्य शर्मा, मालूम होता है कि तुम्हें रुपयों की ज़रूरत आ पड़ी है। मैं पाँच सौ रुपये दे देता हूँ, ले लो।" यों समझाकर उसी वक़्त वह रुपये ले आया।

इसके जवाब में सत्य शर्मा बोला, "महाशय गुप्तजी, कल ही तो आपने कहा था कि तुरंत ब्याज सहित मूल धन जल्दी नहीं चुकायेंगे तो मकान ख़ाली करना होगा। ऐसी हालत में मैं ये पाँच सौ कैसे चुका सकता हूँ?"

"ओह, यही तुम्हारी शंका है? तुम ये पाँच सौ रुपये ले लो, आज शाम तक तुम्हें जो मिलेगा, मुझे दे देना।" लोभ गुप्त ने कहा।

लोभ गुप्त की बातें सुनकर सत्य शर्मा संकोच कर रहा था, तभी उसकी पत्नी बोली-"आप पहले ये रुपये ले लीजिए; उधर रिश्ता क़ायम करने आये हुए लोग बड़ी देर से बैठे हुए हैं!"

सत्य शर्मा की बेटी की शादी उसी वक़्त निश्चित हुई थी, वर के माता-पिता वधू को पाँच-सौ रुपयों के गहने देने पर जोर दे रहे थे।

सत्य शर्मा सकुचाते बोला, "गुप्तजी, शाम तक मुझे जो कुछ प्राप्त होगा, सो आपको देने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है; मगर मुझे शाम तक कुछ हाथ लगने की कोई संभावना नहीं है।" इस पर लोभ गुप्त बोला, "इस बात की फ़िक्र मत करो। हम तो पड़ोसी ठहरे। मैं इस वक़्त तुम्हें दूँ तो तुम बाद में मुझे जरूर दोगे। तुम संकोच न करो।" यों समझाते हुए लोभ गुप्त ने सत्य शर्मा के हाथ पाँच-सौ रुपये थमा दिये।

लोभ गुप्त अच्छी तरह से जानता था कि सत्य शर्मा बात के पक्के हैं।

शाम होने को थी, लेकिन सत्य शर्मा को धन प्राप्त होने की कोई सूचना न थी। इस पर लोभ गुप्त घबड़ा कर मंदिर में पहुँचा और विघ्नेश्वर की मूर्ति की सूँड पकड़कर खींचते हुए बोला, "विघ्नेश्वरजी, सत्य शर्मा को जल्दी एक हज़ार रुपये दिला दीजिए..." यों कह ही रहा था कि उसकी हथेली सूँड के बीच फँस गई। लोभ गुप्त

ने उसे निकालने की बड़ी कोशिश की, मगर सूँड ने उसे कसकर पकड़ लिया।

पीड़ा के मारे लोभ गुप्त छटपटाने लगा, उसी समय मूर्ति के भीतर से ये शब्द सुनाई दिये, ''तुम जितनी जल्दी सत्य शर्मा को एक हज़ार रुपये दिलाओगे, उतनी ही जल्दी तुम्हें छुटकारा मिलेगा।''

दूसरे हाथ से लोभ गुप्त अपना सर पीटते हुए बोला, ''भगवन, यह तो सरासर अन्याय है। मैंने पाँच सौ रुपये पहले ही दे दिये हैं ?''

''ऐसी बात है? तुम पाँच सौ रुपये देकर एक हज़ार हड़पना चाहते थे? अरे कंजूस, तुम्हारे लोभ के प्रायश्चित्त के रूप में तुम सत्य शर्मा को शेष पाँच सौ रुपये दे दो। साथ ही तुमने उसे जो कर्ज दिया है, उसका चुकता कर दो और उसकी बेटी की शादी तुम अपने घर की शादी जैसे मनाओ !'' ये शब्द विघ्नेश्वर की मूर्ति के भीतर से सुनाई दिये।

उसी वक्त लोभ गुप्त ने अपने परिवार वालों को बुला भेजा, सत्यशर्मा को बाकी पाँच सौ रुपये दिलवाये, उसका कर्ज रद्द कर दिया और यह शपथ ली कि वह सत्य शर्मा की बेटी की शादी का पूरा खर्च उठायेगा। तब जाकर लोभ गुप्त का हाथ सूँड से बाहर निकला।

गाँववाले यह सोचकर खुश हुए कि कँजूस गुप्त को अच्छा सबक मिल गया है।

इसके बाद लोभ गुप्त ने सत्य शर्मा की बेटी की शादी अपनी बेटी की शादी जैसे ठाट से
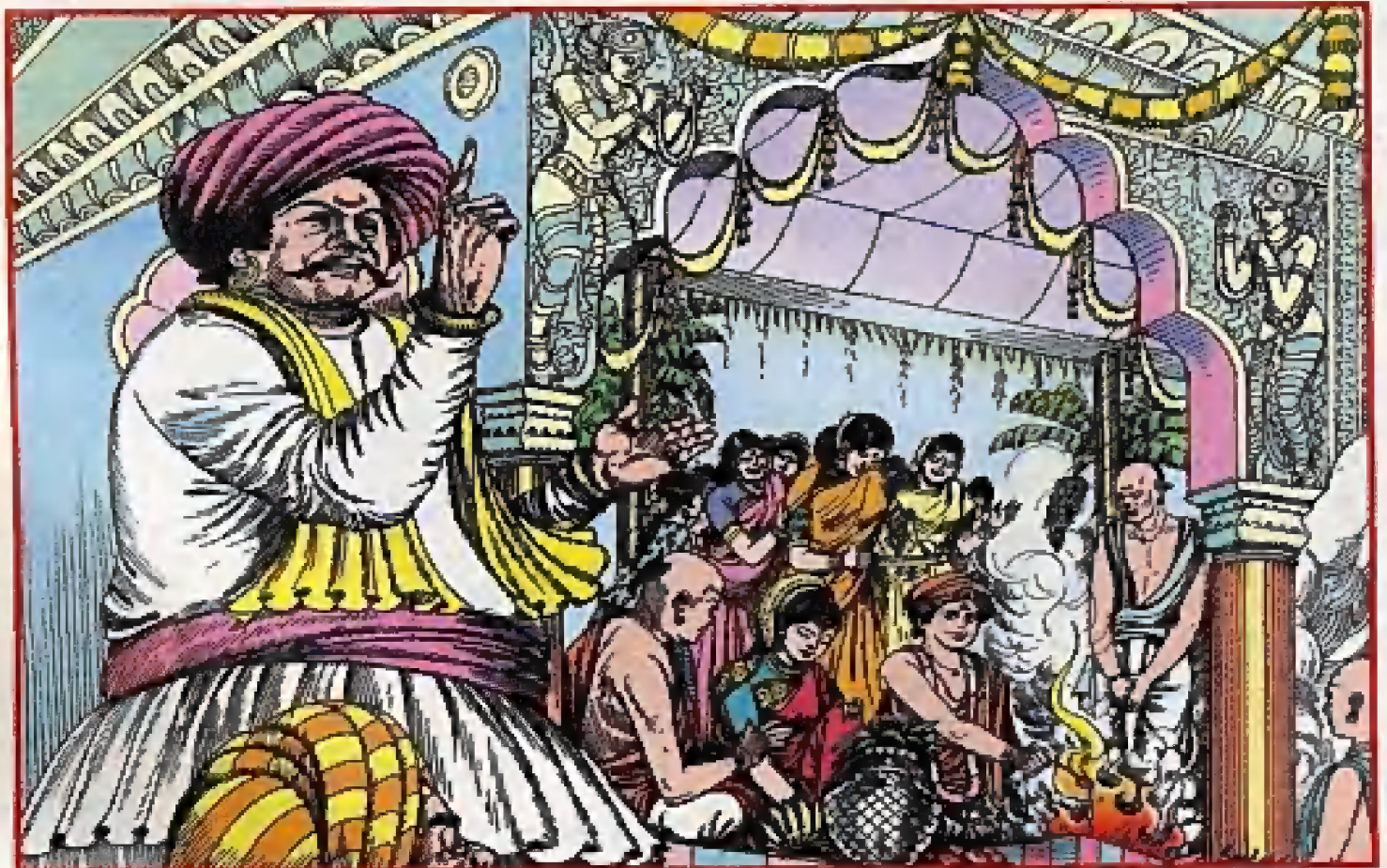
मनाई। उसी दिन से वह अपनी कंजूसी को त्याग कर अपना धन धार्मिक कार्यों में लगाने लगा। जल्द ही वह विघ्नेश्वर की कृपा का पात्र बना और बड़ा धर्मात्मा कहलाया।

कहानी समाप्त कर पावन मिश्र ने विघ्नेश्वर के प्रसाद को बच्चों में बाँट दिया। बच्चे उस प्रसाद को मुँह में डाले ख़ुशी के साथ उछलते-कूदते अपने-अपने घर दौड़कर चले गये।

दूसरे दिन शामको एक लड़की ने एक और चित्र दिखाकर उसकी कहानी सुनाने पर जोर दिया। पावन मिश्र ने यों कहानी शुरू की :

कल्याणी नगर में कलहकंठी नामक एक अमीर औरत थी। अपनी बहू को उसने बेरहमी के साथ घर से निकाल दिया क्योंकि वह अपने मायके से ज़्यादा गहने लेकर नहीं आई थी।

कलहकंठी की बहू सौदामिनी दुखी हो अपने ससुराल से चल पड़ी और अपने मायके लौटते समय रास्ता भटककर जंगल में पहुँच गई। आख़िर भूख के मारे तड़पते हुए वह एक कैथ वृक्ष के पास गिर पड़ी।

वह सोचने लगी कि उसके मायके जाने का कोई फ़ायदा नहीं है, क्योंकि उसकी शादी के वक़्त गहनों के वास्ते उसके पिता ने जो कर्ज लिया था, वे अभी तक चुका न पाये। ऐसी हालत में वे फिर और गहने कहाँ से ला सकते हैं? इसलिए इस घने जंगल में मर जाना कहीं उत्तम है। सौदामिनी यों सोच ही रही थी, तभी पेड़ से एक कैथ फल गिर पड़ा और लुढ़कते-लुढ़कते उसके समीप आ पहुँचा। वह फल हाथ में लेकर सौदामिनी उठकर बैठने को हुई, तभी एक बड़ा हाथी दौड़ते हुए उसकी ओर आते दिखाई पड़ा।

सौदामिनी बचपन से ही विघ्नेश्वर के प्रति बड़ी श्रद्धा व भक्ति रखती थी। वह विघ्नेश्वर का स्मरण करके हाथी के पैरों के नीचे दबकर मरने के ख्याल से उसके सामने गई, मगर हाथी अचानक रुक गया।

इसके बाद हाथी ने अपनी सूँड से सौदामिनी के हाथ से कैथा ले लिया, उसे आशीर्वाद देने के लिए उसके सर पर सूँड फेरा और उसका हाथ पकड़कर उसे एक गुफा के पास ले गया।
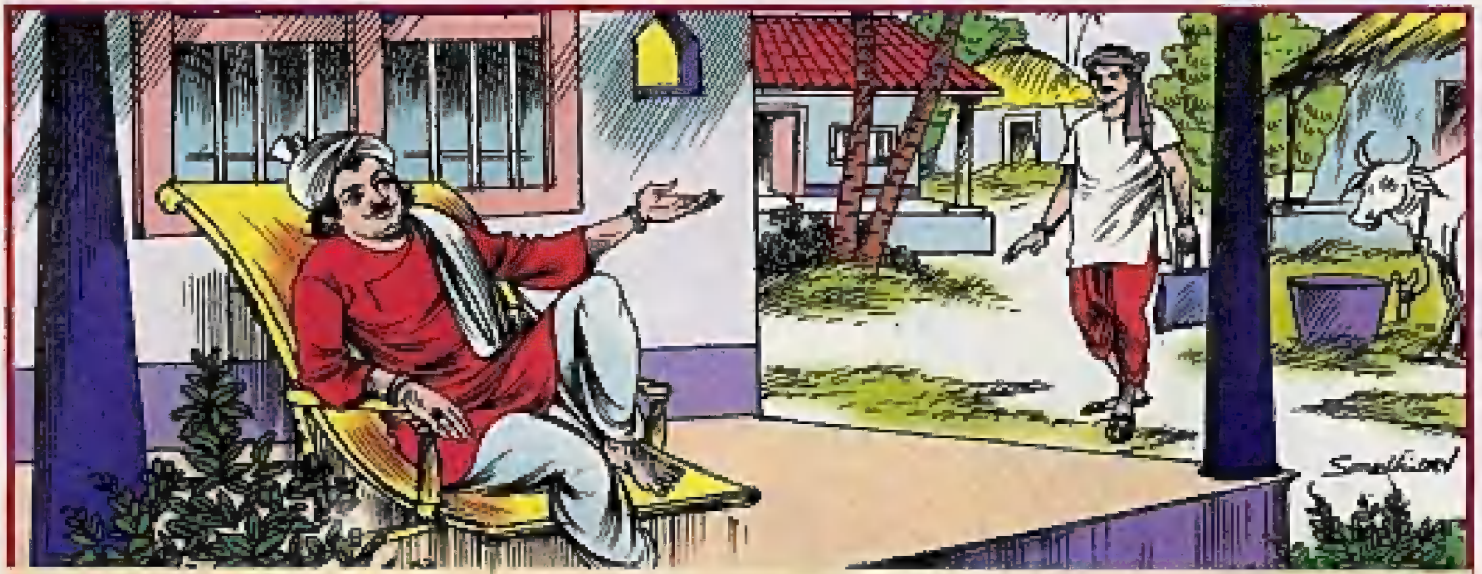
राक्षसी का पालतू तोता

वीरबाहु बड़ा ही नादान था। उसे मालूम था कि उसे नुक़सान पहुँच रहा है, फिर भी वह विरोध नहीं करता था। चुप रह जाता था। वह दूध बेचकर अपना परिवार चलाता था।

उसकी झोंपड़ी के बग़ल में खपरैल की छत का एक पुराना घर था। हाल ही में विष्णु और लक्ष्मी नामक दंपति किराये पर उसमें रहने आये। वे दोनों अव्वल दर्जे के खुदगर्ज़ थे। अपना काम निकालने में बड़े ही चतुर थे। दो-तीन दिनों में ही उन्होंने भांप लिया कि वीरबाहु बिलकुल ही भोला-भाला है। वे उससे बेगारी कराने लगे। मीठी-मीठी बातें करते हुए उससे अपने काम कराने लगे। वीरबाहु को शहर में दूध बेचने के बाद उनके लिए आवश्यक सामान खरीदकर लाना पड़ता था। तड़के ही उसे उनका आंगन साफ़ करना पड़ता था। कभी-कभी कुएँ से पानी खींचकर उनके बरतन भरना पड़ता था।

इसी बीच वीरबाहु की बेटी की शादी पक्की हुई। चूँकि बनारस में अच्छी रेशमी साड़ियाँ मिलती हैं, इसलिए साड़ियाँ खरीदने वह बनारस जाने के लिए निकल पड़ा।

चबूतरे पर बैठे विष्णु ने उससे कहा, ''मेरी पत्नी के लिए भी एक अच्छी साड़ी ले आना। लौटने के बाद रक़म दे दूँगा।''

वीरबाहु ने बनारस में लक्ष्मी के लिए भी एक साड़ी खरीदी। जब वह लौटा तब उसके घर में प्रवेश करने के पहले ही विष्णु ने उसे रोका और रेशमी साड़ियों में से एक अच्छी साड़ी ले ली और कहा, ''आज शुक्रवार है। मेरी पत्नी अलमारी से पैसे नहीं निकालती। पैसे कल ले लेना।''

परंतु चार दिनों के बाद भी विष्णु ने उसे

- भवानी प्रसाद -

रक़म नहीं दी। बेटी के लिए चूड़ियाँ बनवानी थीं। मजबूर होकर बीरबाहु को विष्णु का दरवाज़ा खटखटाना पड़ा। दरवाज़ा खुलते ही उसने विष्णु से कहा, "मुझे पैसों की सख्त ज़रूरत है। रेशमी साड़ी के वे पाँच सौ रुपये कृपया दीजिए।" हाथ मलते हुए उसने कहा।

विष्णु तेज़ी से अंदर गया और लौटकर साड़ी को ज़मीन पर फेंकते हुए बोला, "तुम्हें और तुम्हारी साड़ी को नमस्कार! मेरी पत्नी को यह साड़ी बिलकुल अच्छी नहीं लगी। ले जाओ।"

बीरबाहु की पत्नी को जब यह बात मालूम हुई तो उसने पति से कहा, "हम अब कर भी क्या सकते हैं? हमें रक़म तुरंत चाहिए। हमारे जाने-पहचाने उसी दुकानदार के पास जाइये और साड़ी लौटाकर रक़म ले आइये।"

बीरबाहु तुरंत बनारस के लिए निकल पड़ा। परंतु इस बार राजमार्ग पर से होते हुए न जाकर जंगल के मार्ग से जाने लगा। जल्दी लौटने के उद्देश्य से उसने ऐसा किया। जंगल के बीचों बीच बरगद का एक बड़ा वृक्ष था। उस वृक्ष की घनी टहनियों के बीच एक राक्षसी रहती थी। वह भी अपनी बेटी की शादी की तैयारी कर रही थी।

बीरबाहु को देखते ही वह बौखला पड़ी, "अरे कलिकाल, दिन दहाड़े मुझ जैसी ब्रह्मराक्षसी के निवास स्थल पर चले आये। तुम्हारी यह हिम्मत?"

राक्षसी को देखते ही बीरबाहु ने थरथर काँपते हुए हाथ जोड़कर कहा, "माँ राक्षसी, मेरा कोई अहित मत करना। अपनी इकलौती बेटी की शादी की तैयारियों में हूँ।" फिर उसने जो कुछ भी हुआ, विस्तारपूर्वक उसे सुनाया और कहा, "रेशमी साड़ी लौटाकर रक़म ले आने के लिए बनारस जा रहा हूँ। जल्दी पहुँचने के उद्देश्य से मैं इस जंगली रास्ते पर निकल आया।"

राक्षसी कुछ कहने ही वाली थी कि इतने में दुल्हन के वेष में सजी उसकी बेटी धड़ाम से पेड़ पर से नीचे कूदी और बीरबाहु के हाथ में रखी थैली खींच ली। थैली में से साड़ी निकालकर उसे माँ को दिखाती हुई बोली, "माँ, देखा, यह साड़ी कितनी सुंदर है। बारहसिंगा के चर्म के बदले विवाह मंडप में इसे पहन लूँगी तो लोग मुझे देखते ही रह जायेंगे। इसे साड़ी की रक़म दे दो और इसे ले लो।"

राक्षसी ने बेटी के कहे मुताबिक़ साड़ी की रक़म वीरबाहु को दे दी। वह रक़म लेकर जब वह लौटने लगा तब राक्षसी दुल्हिन पिंजडे में बंद एक तोता उसे देती हुई बोली, "इसे मैंने बोलना सिखाया। अपने प्राण से भी ज्यादा इसे चाहती हूँ। इसका दावा है कि अपनी होनेवाली सास के तोतों को, सारिकाओं को और पतंगों को, हाथ में आ जाएँ, तो फूँक डालूँगी। भला मैं क्योंकर इस तोते के कारण अपनी सास से झगड़ा मोल लूँ? इस बातूनी तोते को तुम ले जाओ।"

वीरबाहु तोते को लेकर घर लौटने लगा। जब वह लगभग घर पहुँच गया तब घर के आंगन को साफ़ कर रही लक्ष्मी ने पिंजड़े में बंद तोते को देख लिया। उसने वीरबाहु से पूरा विवरण जानने के बाद कहा, "इसका यह मतलब हुआ कि तुम्हें साड़ी की रक़म मिल गयी। वह साड़ी मुझे अच्छी नहीं लगी, इसी कारण तुम्हारा बनारस जाना हुआ और एक बोलनेवाला तोता मिल गया। यह संभव हुआ, मेरे ही कारण, इसलिए यह तोता मेरा ही है।" कहती हुई उसने उससे तोता छीन लिया।

जब लक्ष्मी तोते को लिये घर में घुसी, विष्णु ने आश्चर्य भरे नेत्रों से उसे देखते हुए पूछा, "यह तोता क्यों ले आयी हो? क्या करने जा रही हो?"

"देखते जाना। बोलनेवाले इस तोते से अपने भाग्य बदल दूँगी।" लक्ष्मी ने गर्व भरे स्वर में कहा।

"तोता क्या कहीं भाग्य बदलता है?" संशय भरे स्वर में विष्णु ने कहा।

"तो सुनो। परसों हमारे राजा के बेटे का पाँचवाँ जन्मदिन है। बहुत बड़े पैमाने पर उत्सव मनाया जानेवाला है। राजा के बेटे को उसके पाँचवें जन्म दिनोत्सव पर बोलनेवाले इस तोते को भेंट स्वरूप दूँगी तो राजा हमें इतना सोना देंगे जिसे हम ढो भी नहीं सकते।" लक्ष्मी ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

लक्ष्मी की बातें अभी पूरी भी नहीं हुईं कि इतने में अपने पंखों को फड़फड़ाते हुए तोते ने मीठे स्वर में कहा, "वाह रे मेरा भाग्य।"

दूसरे ही दिन विष्णु और लक्ष्मी राक्षसी की बेटी के पालतू तोते को लेकर राजधानी पहुँचे। राजप्रसाद में युवराज का जन्मदिन धूमधाम से

मनाया जा रहा था। लक्ष्मी ने राजा को सविनय प्रणाम करते हुए कहा, ''प्रभु, जिस दिन युवराज का जन्म हुआ, उसी दिन नाना प्रकार के कष्ट उठाकर मैंने इस तोते को पकड़ लिया और तब से लेकर इसे बड़े प्यार से पालती आ रही हूँ। इसे प्यार से बोलना भी सिखाया। युवराज के जन्म दिन पर मेरी तरफ़ से यह भेंट स्वीकार कीजिए।''

लक्ष्मी की बातें राजा और रानी को बहुत अच्छी लगीं। उन्हें बड़ा आनंद हुआ। युवराज ने बड़े ही प्यार से तोते को अपने हाथ में लिया। ''अरी, बोल, मुझसे बात कर।'' उसे चूमते हुए युवराज ने कहा।

राक्षसी की बेटी से बातें सीखनेवाले तोते ने कहा, ''वाह, मैं कितना भाग्यशाली हूँ! मेरे भाग्य का क्या कहना! इस जीवन काल में नवनीत की तरह चमक रहे हो, चमचमा रहे हो। मर जाओगे तो तपाये गये घी की तरह गंध फैलाओगे। तुम्हें देखते हुए लगता है, यहीं का यहीं तुम्हें चबा डालूँ!'' यों कहकर उसने युवराज का हाथ कसके पकड़ लिया।

युवराज ज़ोर से रोने लगा और तोते को छोड़ दिया। दूसरे ही क्षण तोता उड़ गया। युवराज के गालों से लहू की बूँदें गिरने लगीं। यह दृश्य देखकर राजदंपति आपसे बाहर हो गये।

राजवैद्य ने आकर तुरंत युवराज की चिकित्सा की। मंत्री कहने लगा, ''महाराज, यह पड़ोसी राजा का षड्यंत्र है। युवराज के जन्म दिन पर जान-बूझकर अशुभ बातें कहलाने के लिए तोते को बोलना सिखाकर उसे यहाँ भेजा।''

राजा ने वहीं का वहीं हुक्म दिया कि विष्णु और लक्ष्मी को कोड़े से पिटवाया जाये और फिर उन्हें जेल में डाल दिया जाये।

विष्णु और लक्ष्मी को अपने को निर्दोष साबित करने में छः महीने लगे। फिर से गाँव लौटने में उन्हें सकुचाहट हुई। इसलिए वे किसी और गाँव में जाकर रहने लगे।

राक्षसी की बेटी के तोते की वजह से वीरबाहु, विष्णु और लक्ष्मी के अत्याचार से बच गया। और पत्नी के साथ सुखपूर्वक जीवन बिताने लगा।
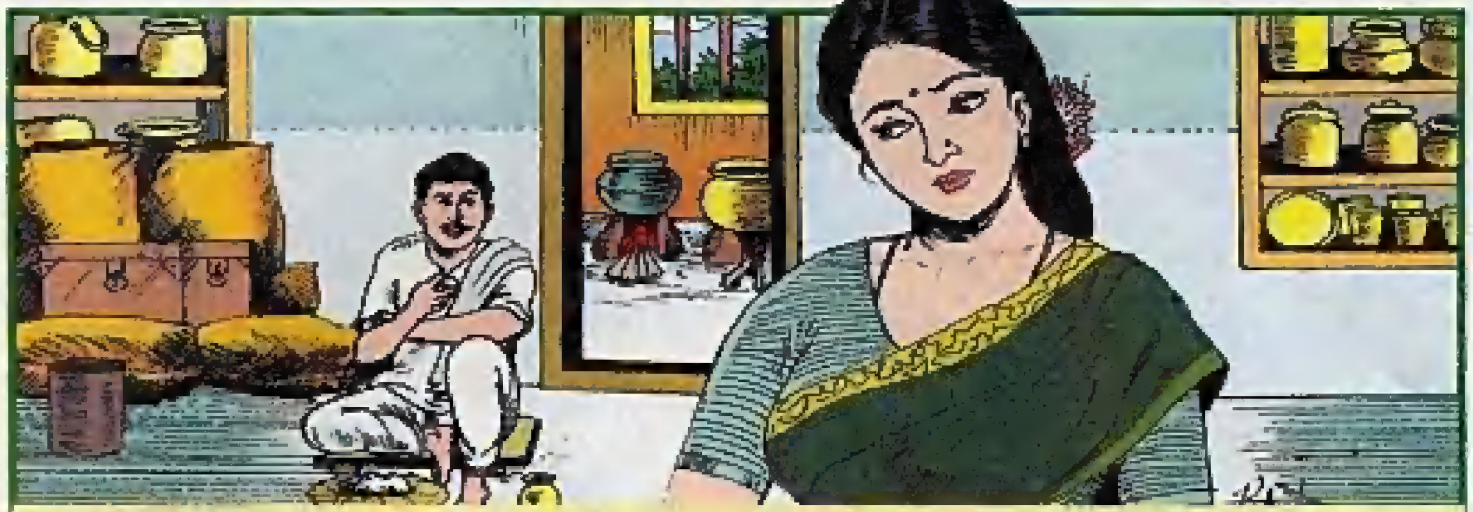
ग़लती का एहसास

सीताराम एक छोटा व्यापारी है। उसकी शादी अभी-अभी सीता से हुई। उसके ससुराल आये अभी एक महीना भी नहीं हुआ कि उसने अपनी सास पर यह दोष मढ़कर उसे ननद के घर भेज दिया कि वह बात-बात पर झगड़ा करती रहती है। अब घर में सीताराम और सीता मात्र थे।

उनके घर के एक ओर राजाराम का परिवार रहता है तो दूसरी ओर सोमनाथ का परिवार। वे दोनों परिवार संपन्न नहीं हैं। इसलिए राजाराम की पत्नी रमा ने और सोमनाथ की पत्नी सत्या ने सीता से दोस्ती कर ली। समय-समय पर वे उससे दाल, शक्कर आदि माँगकर ले जाने की कोशिश करती रहती हैं। परंतु सीता इन बातों में बड़ी सावधानी बरतती है। वह उनसे मीठी-मीठी बातें कर तो लेती है, पर बिना कुछ दिये ही उन्हें वापस भेज देती है।

परंतु इधर कुछ दिनों से सीताराम और सीता के बीच छोटी-छोटी बात को लेकर झगड़े होने लगे। सीता एकदम सुस्त है। मध्याह्न के भोजन के साथ-साथ रात का खाना भी पका लेती है और पूरे दिन के काम की समाप्ति पर खुश होती रहती है। सीताराम रात को देर से लौटता है, क्योंकि उसे दुकान में रहना पड़ता है। लौटने के बाद जब वह खाने बैठता है तो थाली में परोसे व्यंजनों को देखकर वह चिढ़ जाता है और कहने लगता है, ''ये तो बासी हैं। रात को भी पकाओगे तो तुम्हारा क्या जाता है? मेरी माँ ने कभी भी बासी खाना मुझे नहीं खिलाया।''

सीता उसकी इस शिकायत से एकदम नाराज़ हो उठी और ऊँचे स्वर में व्यंग्य भरे स्वर में कहने लगी, ''हाँ, हाँ, क्यों नहीं, ज़मींदार का परिवार है न तुम्हारा! तुम्हारी कमाई के बल पर ही मैं आराम से ज़िन्दगी काट रही हूँ! मेरी माँ की दीदी की बेटी का शौहर सिर्फ तीन एकड़ का भूस्वामी है। पर शादी में उन्होंने छः तोला सोना दिया और शादी होने के तीन महीनों के

- रामपाल -
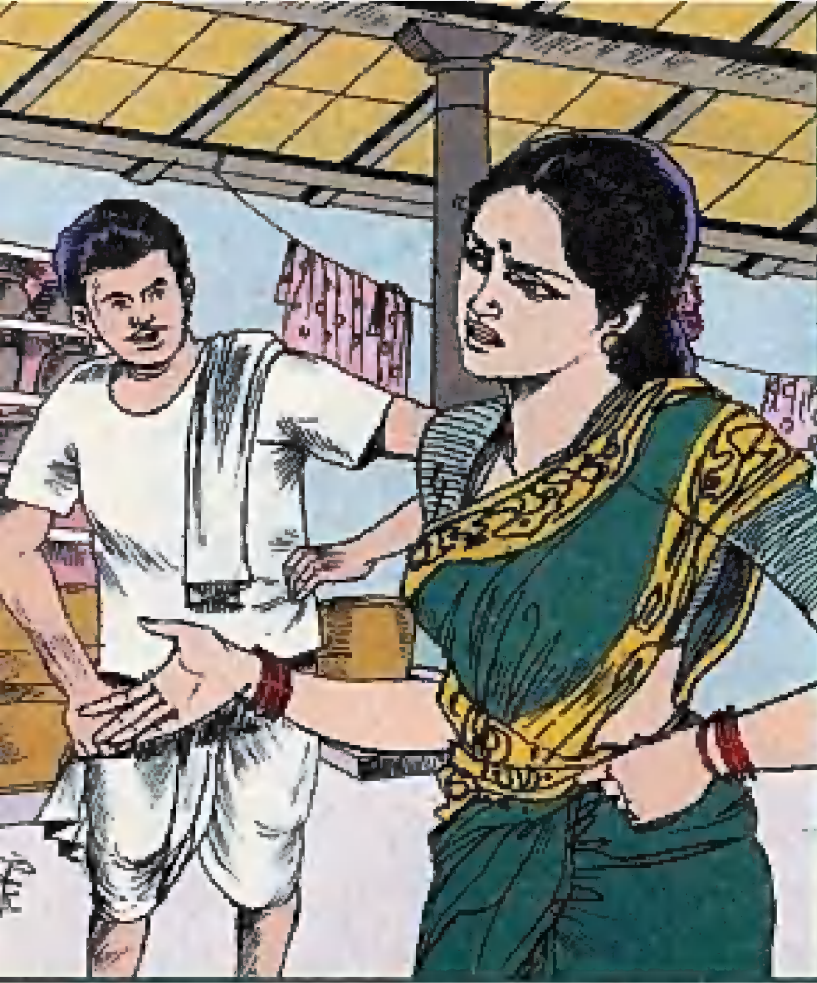
अंदर ही तीन तोले सोने का हार बनवाया। रात दिन व्यापार में लगे रहते हो, फिर भी तुम्हें और तुम्हारी माता को यह नहीं सूझा कि घर की बहू के लिए सोने का एक हार बनवायें। शादी हुए छः महीने गुज़र गये, पर क्या तुमने मेरे लिए कुछ खरीदा?''

बस, देखते-देखते दोनों में झगड़ा हो गया। एक दूसरे को दोषी ठहराने लगे। सीताराम ने आपे से बाहर होते हुए कहा, ''तुम जैसी चुड़ैल के साथ परिवार चलाना मेरे बस की बात नहीं है। इससे अच्छा तो यही है कि मैं अकेले ही ज़िन्दगी गुज़ारूँ। जा, जहाँ जाना चाहती है, चली जा,'' कहते हुए उसने सीता का हाथ पकड़कर उसे दरवाज़े की तरफ़ ढकेला।

सीता भी तैश में आ गयी और चार-पाँच साड़ियाँ पेटी में रखती हुई बोली, ''देखो, मैं जा रही हूँ। तुम ज़िन्दगी कैसे गुज़ारोगे, इससे मुझे कुछ भी लेना-देना नहीं है। जैसे चाहते हो, जीओ। जब तक तुम खुद मुझे लेने नहीं आओगे, तब तक मैं इस घर में क़दम नहीं रखूँगी।'' यह कहकर वह बाहर चली गई।

''मैं तुम्हें लेने आऊँगा? असंभव। यह कभी हो ही नहीं सकता। मैं महाराज की तरह ज़िन्दगी गुज़ारूँगा और भूलकर भी मैं तुम्हें याद नहीं करूँगा, जा, जा!'' चिल्लाता हुआ उसने दरवाज़ा धड़ाम् से बंद कर दिया।

पल भर में यह बात अड़ोस-पड़ोस के लोगों को मालूम हो गयी। एक घंटा पूरा होने के पहले ही रमा ग़रम पकौड़े बनाकर ले आयी और थाली सीताराम के सामने रखती हुई बोली, ''भैय्या, तुम्हारी यह हालत देखकर मुझे रोना आता है। पता नहीं, अकेले कैसे रह पाओगे। भूखे होगे, इसलिए ये पकौड़ियाँ बनाकर लायी हूँ। ग़रम गरम है। खा लेना।'' गरम-गरम पकौड़ियों को देखकर सीताराम के मुँह में पानी भर आया। उसने तुरंत एक टुकड़ा मुँह में डाल लिया।

रमा खुश होती हुई उससे बोली, ''भैय्या, एक छोटी-सी बात पूछती हूँ। बुरा नहीं मानोगे न? तुम्हारी भांजी यानी मेरी बेटी की मंगनी है। बिटिया के गले में डालने के लिए आधे तोले के सोने का हार भी नहीं है। इसी बात का दुख मुझे खाये जा रहा है कि मैं इस हालत में उसे दुल्हेवालों

को कैसे दिखाऊँ। सीता का हार बस एक बार दोगे, तो जैसे ही दुल्हेवाले चले जाएँगे, मैं तुम्हें लौटा दूँगी। दुल्हेवाले जब आयेंगे, तब तुम्हें भी ज़रूर आना होगा। आख़िर तुम हमारे भाई हुए, तुम्हारा रहना ज़रूरी है।''

रमा की बातों में आत्मीयता थी, मिठास था। तिसपर वह सीता से नाराज़ भी था, इसलिए वे बातें उसे बहुत अच्छी लगीं। तुरंत वह घर के अंदर गया और सीता का हार लाकर रमा के हाथों में रखते हुए बोला, ''ले जाना दीदी। घबराने की कोई बात नहीं। आराम से लौटाना।''

रमा ने उसकी तारीफ़ के पुल बाँधे और हार लेकर जाने ही वाली थी कि इतने में अधेड़ उम्र का एक व्यक्ति वहाँ आया। उसने सीताराम से पूछा, ''यह औरत कौन है और क्या आराम से लौटाने की बात कर रहे थे? बताओ, असल में बात क्या है?''

अकस्मात वहाँ आये चाचा विक्रम को देखकर सीताराम को ख़ुशी हुई तो रमा को घबराहट।

विक्रम ने पूरी जानकारी प्राप्त करने के बाद रमा की तरफ़ मुड़कर कहा, ''वह हार सीता का नहीं, मेरी बेटी का है। शादी के वक्त अपनी बहू के गले में डालने के लिए मेरी भाभी ने इसे लिया था। अब मेरी बेटी की भी शादी पक्की हो गयी, इसलिए यह हार ले जाने ही आया हूँ।''

सीताराम को मालूम था कि चाचा झूठ बोल रहे हैं। उसे इस पर आश्चर्य भी हुआ। उसकी
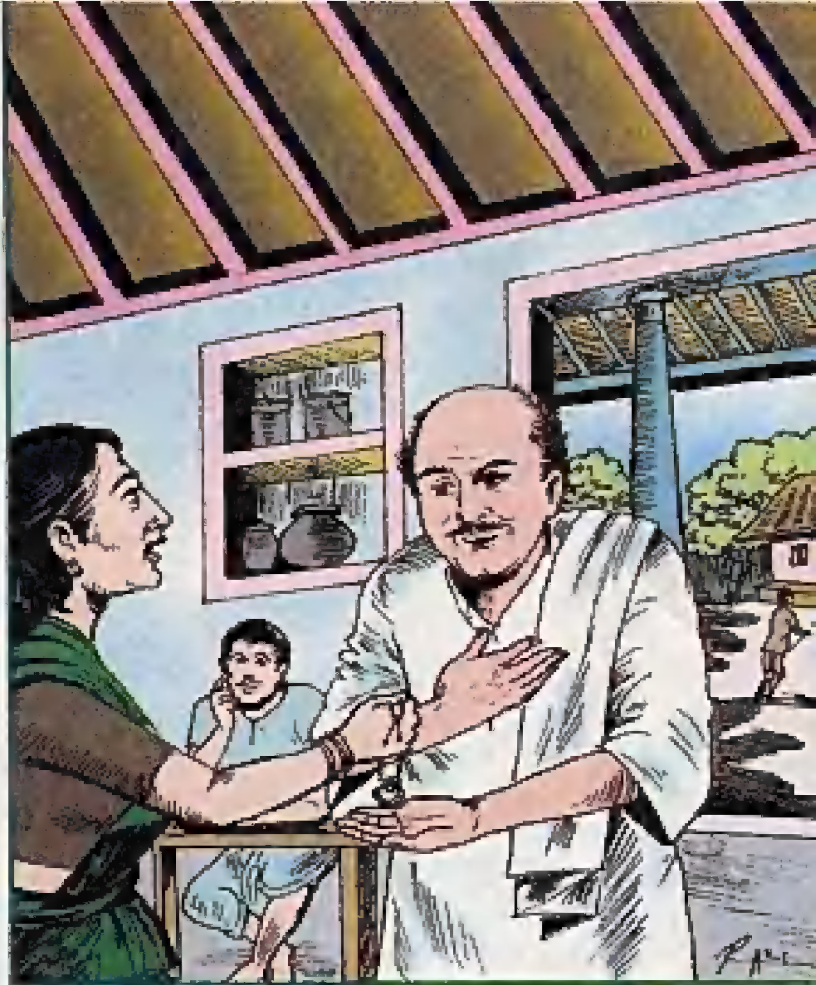
समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ? कैसे कहूँ? परंतु इतने में रमा ने वह हार विक्रम के हाथ में रख दिया।

रमा जब देहली पार कर रही थी तब सत्या एक ख़ाली थाली लिये अंदर आयी। सामने खड़े विक्रम को देखकर वह सहम गयी।

''तुम कौन हो? तुम्हें क्या चाहिए?'' विक्रम ने सत्या से पूछा। इस सवाल पर सत्या और घबरा उठी और बोली, ''घर में चावल नहीं है। बच्चे भूख के मारे तड़प रहे हैं। इसलिए...।''

उसने बात पूरी भी नहीं की कि इतने में आँधी की तरह घर के अंदर घुसती हुई सीता ने कहा, ''सब झूठ है। कल शामको ही तुम्हारे बेटे को चावल का बोरा ढोकर लाते हुए मैंने देखा।''

फिर वह पति की ओर मुड़ती हुई बोली, ''बड़ी देरी से मैं और तुम्हारे चाचाजी खिड़की के बग़ल में ही खड़े होकर यह तमाशा देखते आ रहे हैं। मेरी ग़ैरहाजिरी का फ़ायदा उठाकर देखा, ये पड़ोसी तुम्हें कैसे धोखा दे रहे हैं?''

सीता के इस अप्रत्याशित आगमन से सीताराम और सत्या भी स्तंभित रह गई। सत्या के चले जाने के बाद विक्रम ने पति-पत्नी से कहा, ''देखा, तुम दोनों के आपस के झगड़े का क्या फल निकला? तुम्हें तो मिल-झुलकर रहना चाहिए। पति-पत्नी जब आपस में झगड़ते हैं तब स्वार्थी पड़ोसी अपना उल्लू सीधा करते हैं।'' एक क्षण रुककर विक्रम ने फिर से कहा, ''भाभी हालांकि अपनी ननद के घर में ही रह रही हैं, फिर भी तुम दोनों को लेकर हमेशा परेशान रहती हैं। यही बात बताने मैं यहाँ आया। अच्छा हुआ, मैं समय पर आ गया नहीं तो अनर्थ हो जाता,'' कहते हुए उसने वह हार सीता को दे दिया।

''अच्छा हुआ, मैं रास्ते में आपसे मिली। यह हम दोनों का सौभाग्य है,'' कहते हुए उसकी आँखों में आँसू भर आये।

''मेरी भाभी ने अपनी होनेवाली बहू के लिए एक-एक पैसा जुटाया और यह हार बनवाया। आगे-पीछे सोचे बिना ऐसी मेरी भाभी को तुमने घर से निकाल दिया। कम से कम अब भी सही, तुम्हें मालूम हो जाना चाहिए कि घर में बड़ों का होना कितना आवश्यक है। उनका आदर करना, उनकी बातों को मानना तुम्हारा फर्ज है। तुम्हारे लिए यह अच्छा भी साबित होगा।''

उसकी इन बातों पर शर्म के मारे सिर झुकाकर सीता ने कहा, ''मैंने अपनी ग़लती का एहसास कर लिया। यह अनुभव कभी नहीं भूलूँगी।'' फिर सीताराम से कहा, ''सासजी को ले आने के लिए आप आज ही निकल जाइये।''

पत्नी की बातों से सीताराम के चेहरे पर खुशी फैल गयी। पति के मुस्कुराते चेहरे को देखकर सीता ने विक्रम से कहा, ''जब तक सासजी नहीं आतीं तब तक मैं आपको जाने नहीं दूँगी। उनके आने के बाद कम से कम दो-तीन दिन ठहरकर ही आप जायेंगे।''

आर्य

अज्ञात युवराज की साहस भरी विचित्र गाथा

यह उसका बाल्यकाल था। वन्य प्राणियों के बीच में जब तक रहा, तब तक उसने निश्चिंत जीवन बिताया, यौवन में उसने मानव संसार में क़दम रखा। पग-पग पर शुरू हुईं उसकी विपत्तियाँ। उसकी जान जोखिम में पड़ गयी। जिन जोखिमों में वह फँसा, वे जंगली जंतुओं की वजह से नहीं, भयंकर मानव व्याघ्रों की वजह से थे। वह बलवान है, साहसी है। शत्रुओं का मुकाबला और उनका अंत करने में कभी भी पीछे हटता नहीं। वह असाधारण वीर और साहसी है। यह आर्य कौन है? विचित्र अज्ञात युवराज! चन्दामामा के जुलाई २००३ के अंक से इस विचित्र साहसपूर्ण गाथा को (नये कामिक्स) में पढ़िये और इसका आनंद लूटिये।

अपने पास के एजेंट से आज ही अपनी प्रति सुरक्षित कर लीजिए।

S. Gandhi Ayyar
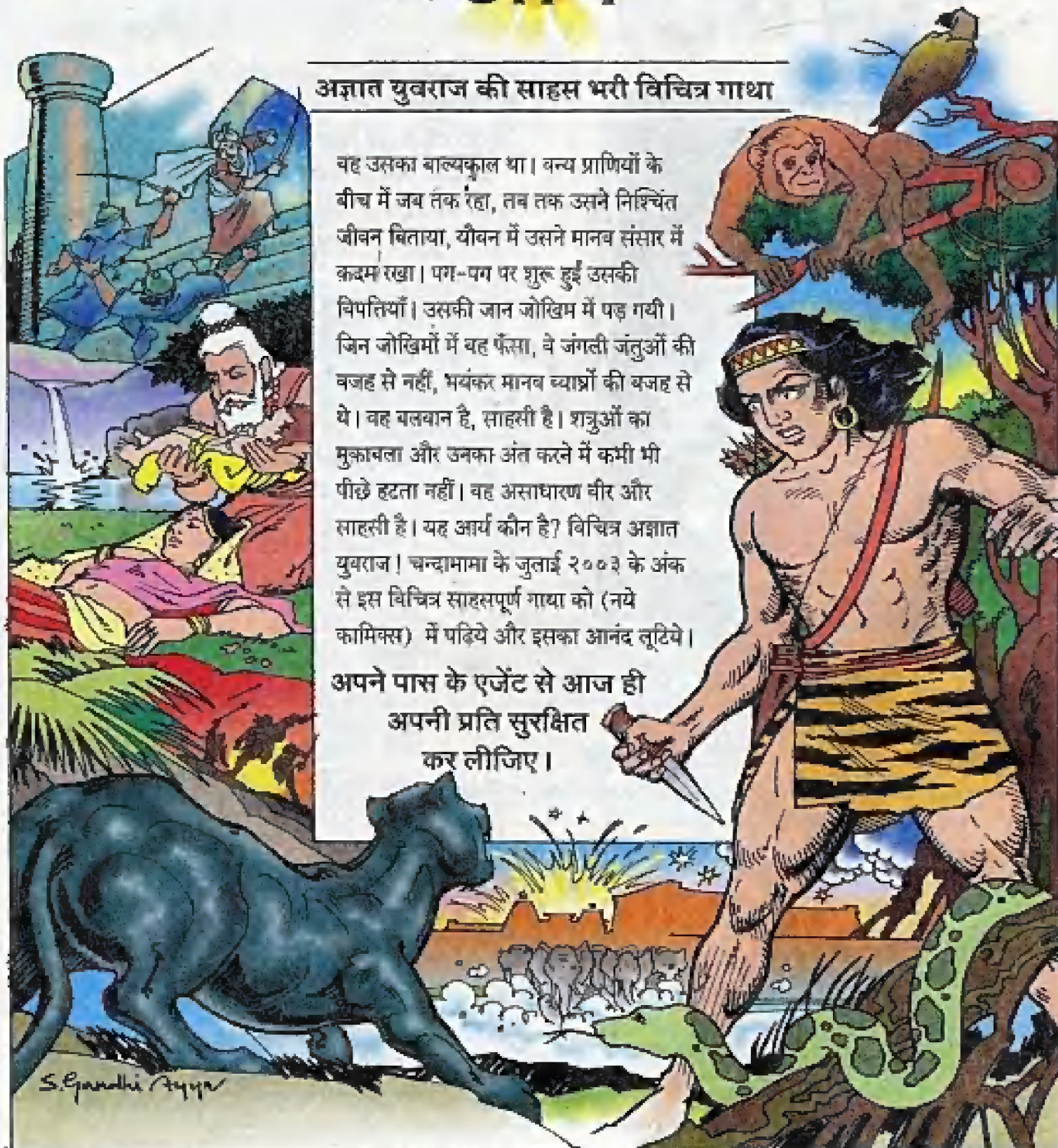
बदला

मलय के आसपास मारुदेव नाम का जादूगर था। वह बहुत-से मंत्र जानता था, पर कमाई के लिए उनका उपयोग नहीं करता था। इसलिए वह हमेशा गरीब ही रहा। उसका लव नाम का एक लड़का था। पिता ने उसे अपनी सब विद्या सिखा दी।

लव अपनी विद्या का धन और कीर्ति के लिए उपयोग करना चाहता था। इसलिए वह अपना गाँव छोड़कर, देश-विदेश में घूमने निकल पड़ा। कई राजाओं ने उसके जादू को देखकर, उसे बहुत-से इनाम दिये। इस तरह घूमता-घामता वह तोरण देश पहुँचा। वहाँ के राजा के पास जाकर उसने अपना जादू दिखाने की अनुमति माँगी।

तोरण देश के राजा को बहुत दिनों बाद, एक लड़का पैदा हुआ था। उसकी जन्मकुण्डली देखकर, ज्योतिषियों ने बताया था कि जब वह दो वर्ष का होगा, एक जादूगर आयेगा और उसके कारण, उसका हीन योग आयेगा। तब से राजा, जादू और जादूगर के नाम से पसीना-पसीना हो जाता था। अब लव ने जाकर जब कहा कि वह जादूगर है, तो राजा घबरा गया। उसका लड़का दो वर्ष का हो गया था। इसके कारण, ज़रूर मेरे लड़के को कोई न कोई हानि होगी।

राजा ने यह सोचकर, मंत्री से कहा, ''जैसे भी हो, इस जादूगर को भेज दो।'' मंत्री ने लव को एकांत में बुलाकर कहा, ''महाराजा को जादू का बहुत शौक है। इसलिए तुम्हारे आतिथ्य की विशेष व्यवस्था करने के लिए राजा ने कहा है। आज राजा के अतिथि गृह में आतिथ्य स्वीकार करो। कल तुम्हारे प्रदर्शन का इन्तज़ाम कर दिया जायेगा।''

लव बड़ा खुश हुआ। उस दिन रात को मंत्री ने उसको विष मिला हुआ अन्न खिला दिया। सबेरे होते होते नौकरों द्वारा उसका शव गड़वा भी दिया गया।

- ओमप्रकाश -

घूमने लगा। जब दासी राजकुमार को घुमाने के लिए आयी, उसने अपनी विद्या से दासी को मूर्छित कर दिया और राजकुमार को उठाकर अपने देश में ले गया। घर पहुँचकर, उसने राजकुमा के वस्त्र, आभूषण निकालकर, एक संदूक में रखा और उस लड़के को अपने लड़के की तरह पालने-पोसने लगा।

तोरण राजा को जब मालूम हुआ कि उसके लड़के को कोई उठा ले गया है, तो वह दुखी हो उठा। जो कुछ सावधानी उसने बरती थी, वह सब व्यर्थ गई और उसका इकलौता लड़का कहीं चला गया। लड़के के लिए बिलखते राजा से मंत्री ने कहा, ''महाराज, शोक न कीजिए। जो कुछ भाग्य में लिखा था, वह हुआ। जो लड़के को उठा ले गया है, वह ज़रूर जादूगर होगा। जिस लड़के को हमने मरवाया है, हो सकता है, उसका पिता ही हो, या कोई और संबंधी। लगता है, हम खुद ही यह आपत्ति मोल ले बैठे हैं। मगर हमारे ज्योतिषियों ने बताया है कि लड़के के प्राण को कोई हानि न होगी। अच्छा समय आने पर, कुछ दिनों बाद वह स्वयं आ जायेगा।''

लव की जब हत्या की गई थी, तब उसकी उम्र कोई सोलह साल की थी। मारुदेव ने राजकुमार को सोलह वर्ष तक पाला पोसा, फिर अपना बदला लेने की सोचने लगा। वह उसको लेकर, तोरण देश आया। उसने राजकुमार से कहा, ''बेटा, तुम यह संदूक लेकर, राजा के दर्शन करो। जब तुम बच्चे थे, तब तुम्हारे बड़े

भले ही यह सब चुपचाप कर दिया गया हो, पर शहर भर में यह खबर फैल गई। कुछ दिनों बाद, यह खबर मारुदेव के पास गई। यह जानने के लिए कि यह बात सच है कि नहीं, वह स्वयं निकला। वह भी उसी रास्ते, अपना जादू दिखाता गया, जिस रास्ते लव गया था। वह भी तोरण देश पहुँचा। कई जानते थे कि लव तोरण आया था। पर वह कहाँ से आया था और कहाँ गया, कोई नहीं जानता था। नगर में उसने यह भी सुना कि लव को राजमहल में अतिथि बनाकर, मार दिया गया था।

मारुदेव स्वयं अच्छा आदमी था। परंतु यह जानकर कि बिना किसी कारण, राजा ने उसके लड़के को मरवा दिया है, उसने बदला लेने की ठानी। वह राजमहल के आसपास ही

भाई ने इस तोरण राजा के यहाँ आतिथ्य पाया था, राजा ने उसको जो इनाम दिये थे, उसके बदले यह संदूक लाये हो, यह कहकर, राजा को संदूक दे देना।''

राजकुमार ने पूछा, ''क्या कोई मेरा भाई था? क्यों नहीं पहले बताया?''

''पहले, जो मैंने कहा है, वह करो। फिर तुम स्वयं अपने भाई के बारे में जान जाओगे। उसे तुम देखोगे भी।'' मारुदेव ने कहा।

राजकुमार संदूक लेकर, महल में राजा के दर्शन के लिए गया। उसने राजा को नमस्कार करके कहा, ''महाराज, मैं मारुदेव नाम के जादूगर का लड़का हूँ। बहुत साल पहले जब मेरा भाई जादू के प्रदर्शन के लिए आया था, तब आपने उसका अतिथि सत्कार किया था और उपहार दिये थे। उनके बदले, मेरे पिता ने आपको यह संदूक देने के लिए कहा है।'' उसने यह कहकर, संदूक राजा के सामने रखा। राजा ने संदूक खोलकर देखा, तो पाया कि जब उसका लड़का खो गया था, और उस समय उसने जो कपड़े और गहने पहन रखे थे, वे ही उसमें थे।

दुःख और क्रोध के कारण, उसकी अक्ल जाती रही। उसने गुस्से में अपने लड़के को मारने की कोशिश की। मंत्री ने उसे रोकते हुए कहा, ''जल्दी न कीजिए। यह बात सच है कि ये कपड़े राजकुमार के हैं। पर यदि उसने राजकुमार को मार दिया होता, तो तभी इन्हें भेज देता। इस लड़के की उम्र भी, राजकुमार की उम्र जितनी ही लगती है।''

मंत्री ने राजा के सामने रखे संदूक में से, एक-एक वस्त्र निकालकर देखा, तो तह में एक चीट रखी हुई थी। उस पर यह लिखा हुआ था, ''राजा, तुमने अपने लड़के की ही हत्या की। मेरे लड़के को मरवाने का, मैंने यूँ बदला लिया है।''

यह चीट देखकर, राजा पहले तो घबराया। यदि मंत्री न रोकता, तो जैसा जादूगर ने सोचा था, वह अपने लड़के को मार देता। राजा अपनी मूर्खता पर पछताया। उसने अपने लड़के का आलिंगन किया। उसने जादूगर को बुलवाया और उससे माफ़ी माँगी कि बिना कारण ही उसके लड़के को मरवा दिया था। उसे उसने एक जागीर इनाम में दी।
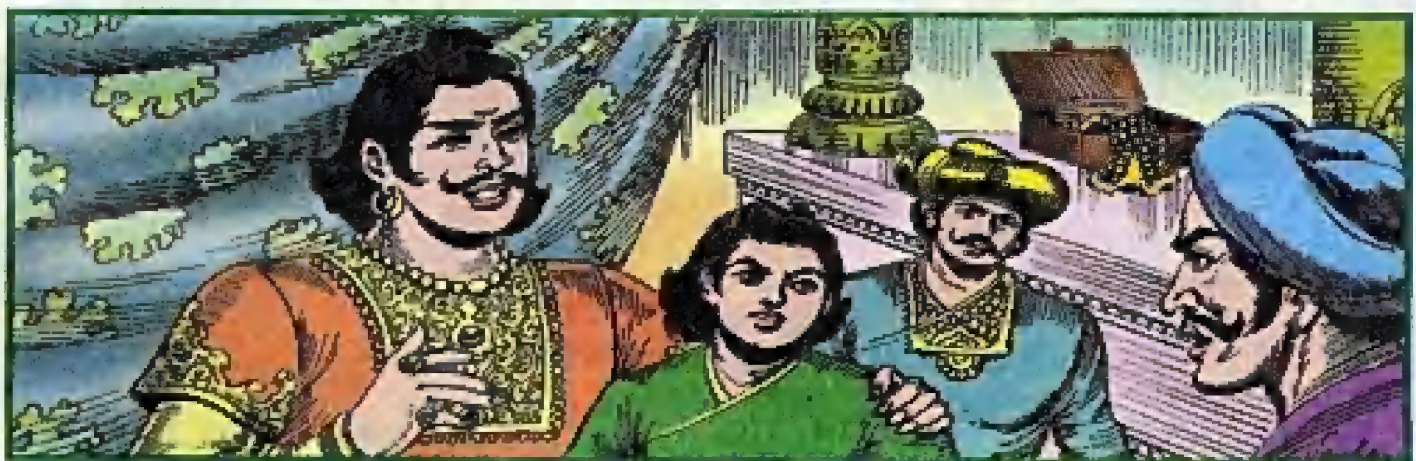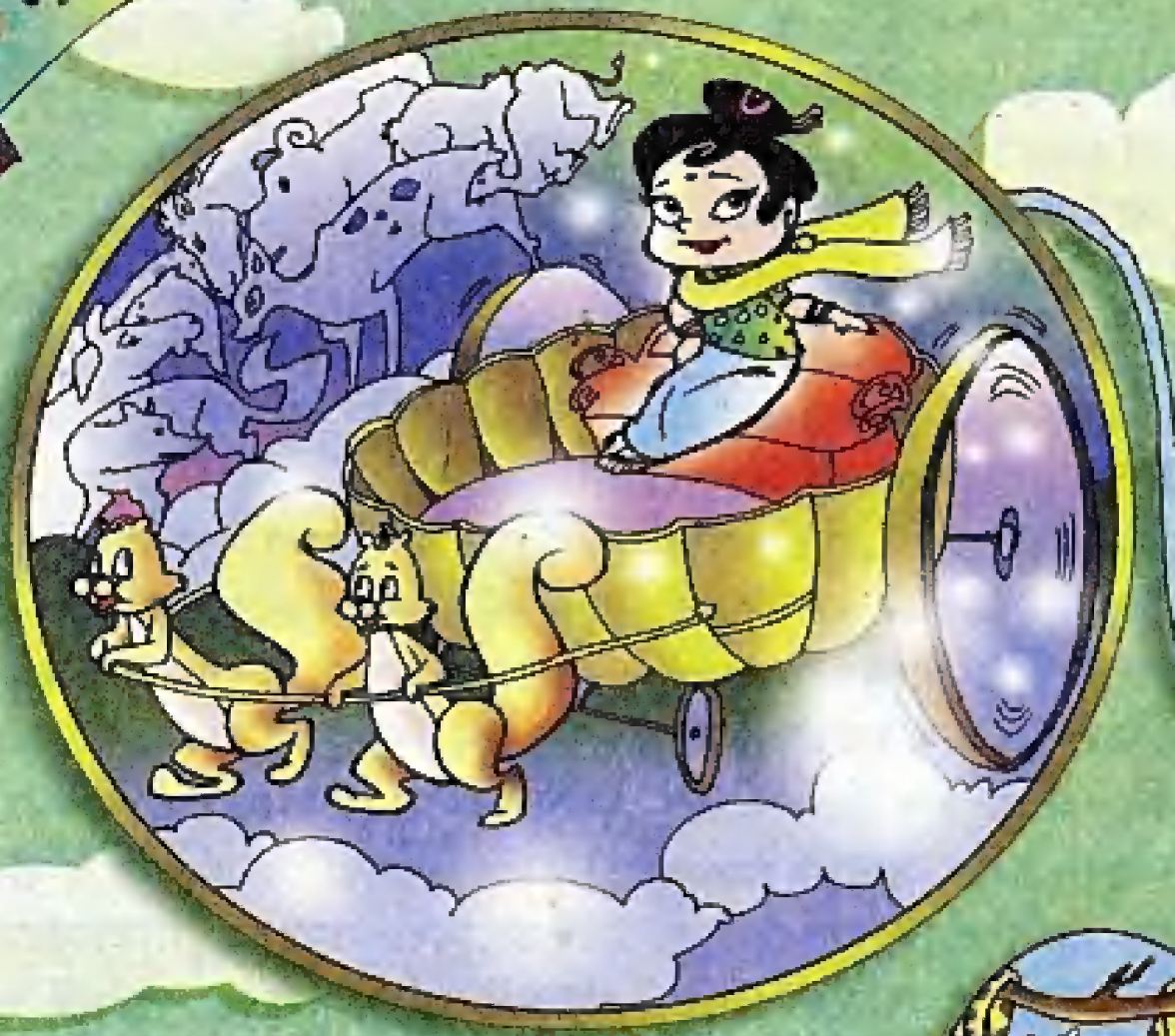
मनोरंजन टाइम्स
सिण्डरवेला एक कद्दू के रथ पर सवारी का मज़ा ले रही है। कुछ जानवर उसकी एक झाँकी देखना चाहते हैं। क्या उन्हें पहचान सकते हो?
मुन्नी आइने में झूला झूल रही है। लेकिन दोनों चित्रों में आठ अन्तर हैं। तुम कितनों की खोज कर सकते हो?

स्लीपिंग ब्यूटी, मुन्नी एक छोटी मत्स्य कन्या बन जाने का सपना देख रही है।
उसका सपना साकार बनाने के लिए हम कुछ रंग भर दें।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

Soura

Mahantesh C. Morabad

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

पढ़ने में मशगूल हैं, चश्मा पहने छोटू राम ।
खेल-खिलौनों में खोई मैं, पढ़ने से क्या काम ।।

बधाइयाँ

जून अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

टी. अभिषेक,
C/o. टी. सुभाष चन्द्र
नं. ३१-७-१, कुम्मुरी वीथी,
अल्लीपुरम, विशाखापतनम - ४.

मनोरंजन टाइम्स के उत्तर (पृष्ठ-६४-६५) -

जानवर सिण्डरबेला की झाँकी ले रहे हैं।

आठ अन्तर हैं - मुन्नी का हेयर बैंड, पेड़ की शाखा, सबसे ऊपर के पक्षी के पंख, साँप की पूंछ, साँप पर धब्बे, गायब बादल, नीचे के पक्षी में पंखों की संख्या।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

Amul चॉकलेट
व्हिज़ किड कॉन्टेस्ट
जीतने के लिए हैं 10 कम्प्यूटर्स!
Amul
Amul
MILK CHOCOLATE
WIN
10 COMPUTERS !
ENTER WHIZ KID CONTEST.
40 ग्रा. अमूल चॉकलेट का एक पैक ख़रीदकर
आप जीत सकते हैं 10 कम्प्यूटर्स.
तो जल्दी कीजिए! ऑफ़र सिर्फ़ 30 जून तक ही है.
गुजरात को-ऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड, आणंद-388 001.